

RESULT MITRA

Test No. 3 (General Studies I)

1. सिंधु सभ्यता व वैदिक संस्कृति में मूलभूत अंतर बताइए।

परिचय:

सिंधु सभ्यता और वैदिक संस्कृति, दोनों ही भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीनतम सभ्यताएं हैं, लेकिन इनके सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर थे। सिंधु सभ्यता (लगभग 3300-1300 ईसा पूर्व) एक अत्यधिक विकसित शहरी सभ्यता थी, जबकि वैदिक संस्कृति (लगभग 1500-600 ईसा पूर्व) मुख्यतः एक ग्रामीण, आर्य समाज पर आधारित थी। इन दोनों सभ्यताओं का भारतीय इतिहास और संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

विषय	सिंधु सभ्यता	वैदिक संस्कृति
1. समय अवधि	लगभग 3300-1300 ईसा पूर्व (मुख्य काल: 2600-1900 ईसा पूर्व)	लगभग 1500-500 ईसा पूर्व
2. स्थान और विस्तार	सिंधु नदी के आसपास, वर्तमान पाकिस्तान और पश्चिमी भारत (हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगन)	मुख्यतः उत्तर भारत, पंजाब, हरियाणा और गंगा-यमुना का दोआब
3. सामाजिक संरचना	समाज व्यवस्थित, नगर नियोजन, सटीक जल निकासी, पक्के मकान, समानता का संकेत	वर्ण व्यवस्था (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र), गोत्र प्रणाली, कुल और कबीलाई जीवन
4. धर्म और धार्मिक प्रथाएँ	मातृदेवी पूजा, पशुपति शिव जैसी मूर्तियाँ, जल और प्रकृति की पूजा	वेदों पर आधारित, यज्ञ, अग्नि पूजा, इंद्र, वरुण, अग्नि जैसे देवताओं की पूजा
5. लिपि और भाषा	अज्ञात लिपि (अब तक पूर्णतः पढ़ी नहीं जा सकी)	संस्कृत भाषा, देवनागरी और ब्राह्मी लिपि (बाद में विकसित)
6. अर्थव्यवस्था	व्यापार, कृषि, उद्योग (मोती, मिट्टी के बर्तन, तांबा, कांसा)	मुख्यतः पशुपालन, कृषि और व्यापार (लोहा, सोना, गाय महत्वपूर्ण)
7. वास्तुकला और निर्माण कला	नगरीकरण, पक्के मकान, ग्रिड सिस्टम, सार्वजनिक स्नानागार (ग्रेट बाथ)	कच्चे मकान, गोबर से बने घर, गाँवों में रहना, नगरीकरण कम
8. पतन के कारण	जलवायु परिवर्तन, बाढ़, आक्रमण, व्यापार में गिरावट	अधिक समय तक चली, धीरे-धीरे महाजनपदों में विकसित हुई

निष्कर्ष:

सिंधु सभ्यता और वैदिक संस्कृति, प्राचीन भारतीय इतिहास की दो प्रमुख लेकिन भिन्न संस्कृतियाँ हैं। सिंधु सभ्यता उन्नत नगर नियोजन, व्यापार और जल प्रबंधन के लिए प्रसिद्ध थी, जबकि वैदिक संस्कृति मुख्यतः धार्मिक अनुष्ठानों, वेदों और सामाजिक वर्गीकरण पर आधारित थी। सिंधु सभ्यता की लिपि अब तक पढ़ी नहीं जा सकी, जबकि वैदिक संस्कृति ने संस्कृत भाषा को जन्म दिया, जो आज भी भारतीय संस्कृति का आधार है। इन दोनों सभ्यताओं ने भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, लेकिन भौगोलिक, आर्थिक और धार्मिक दृष्टिकोण से दोनों में स्पष्ट अंतर है। यह अंतर हमें भारतीय संस्कृति की गहराई और विविधता को समझने में मदद करता है।

2. क्या गुप्तकाल वास्तव में स्वर्णयुग था?

परिचय:

गुप्तकाल (लगभग 320-550 ईस्वी) को भारतीय इतिहास का 'स्वर्णयुग' माना जाता है। इस युग में कला, साहित्य, विज्ञान, प्रशासन और आर्थिक समृद्धि ने अभूतपूर्व ऊंचाइयां छुईं। हालाँकि, इसे स्वर्णयुग कहना सभी दृष्टिकोणों से उचित है या नहीं, यह एक व्यापक चर्चा का विषय है।

मुख्य भाग:

1. सांस्कृतिक और साहित्यिक उत्कर्ष:

- साहित्य: कालिदास (अभिज्ञानशाकुंतलम्, रघुवंश), विशाखदत्त (मुद्राराक्षस), और शूद्रक (मृच्छकटिक) जैसे महान कवियों का उदय।
- संस्कृत का स्वर्णकाल: संस्कृत साहित्य को व्यापक राजकीय संरक्षण मिला।
- कला और वास्तुकला: अजंता-एलोरा की गुफाएं, मंदिर निर्माण, और उत्कृष्ट मूर्तिकला का विकास।

2. विज्ञान और गणित में प्रगति:

- गणित: आर्यभट्ट ने 'आर्यभटीय' में शून्य, दशमलव और पाई (π) का सटीक मान दिया।
- खगोलशास्त्र: वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त जैसे विद्वानों का योगदान।
- चिकित्सा: धन्वंतरि और चरक जैसे चिकित्सकों का उल्लेख।

3. आर्थिक समृद्धि:

- व्यापार: रोम, मध्य एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया तक व्यापारिक संबंध।
- सिक्के: सोने, चांदी और तांबे के सुंदर और कलात्मक सिक्के।
- कृषि और शहरीकरण: समृद्ध कृषि व्यवस्था और नगरों का विकास।

4. प्रशासनिक दक्षता:

- केंद्रीकृत शासन: चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के समय साम्राज्य का विस्तार।
- न्याय प्रणाली: कुशल और संगठित प्रशासन, सुव्यवस्थित राजस्व प्रणाली।

5. धार्मिक सहिष्णुता:

- धर्म: हिंदू धर्म के साथ बौद्ध और जैन धर्म का विकास।
- विश्वविद्यालय: नालंदा और तक्षशिला जैसे शिक्षा केंद्र।

दक्षिण-पूर्व एशिया में हिंदू धर्म का विस्तार:

- प्रारंभिक संपर्क: सिंधु घाटी सभ्यता के समय से ही भारत का दक्षिण-पूर्व एशिया से व्यापारिक संबंध था, जो गुप्तकाल में और भी मजबूत हुआ। व्यापारी, ब्राह्मण और शिल्पकार समुद्री मार्गों से इन क्षेत्रों में पहुँचे और स्थानीय राजाओं के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान किया।
- प्रमुख क्षेत्र:
 - कंबोडिया (प्राचीन कंबोज): अंगकोरवाट जैसे भव्य हिंदू मंदिर, शैव और वैष्णव परंपराएं।
 - चंपा (वर्तमान वियतनाम): शिव और विष्णु की पूजा का केंद्र।
 - इंडोनेशिया (जावा, सुमात्रा, बाली): प्रम्बनन, बोरोबुदुर जैसे मंदिर और महाभारत-रामायण की गाथाएं।
 - मलय (मलेशिया, थाईलैंड): श्रीविजय साम्राज्य में हिंदू प्रभाव और पल्लवों के स्थापत्य का प्रभाव।
- संस्कृति का प्रभाव:
 - भाषा: संस्कृत का व्यापक प्रसार।
 - कला और स्थापत्य: भारतीय शैली के मंदिर, मूर्तिकला और वास्तुकला।
 - धर्म: शैव, वैष्णव और महायान बौद्ध परंपराओं का समन्वय।
 - कानून और प्रशासन: मनुस्मृति और अन्य धर्मशास्त्रों का प्रभाव।

फाह्यान के गुप्तकालीन विचार:

- यात्रा विवरण: चीनी बौद्ध भिक्षु फाह्यान (337-422 ईस्वी) ने 5वीं शताब्दी की शुरुआत में गुप्त साम्राज्य की यात्रा की।
- सकारात्मक दृष्टिकोण:
 - शांति और समृद्धि का वातावरण।
 - कानून-व्यवस्था की उत्कृष्ट स्थिति।
 - बौद्ध धर्म का व्यापक प्रभाव और मठों की समृद्धि।
- नकारात्मक पहलू:
 - निचली जातियों की स्थिति और छुआछूत की प्रथा का उल्लेख।
- प्रमुख ग्रंथ: 'फो-को-की' (A Record of Buddhist Kingdoms), जिसमें उन्होंने भारतीय समाज, शासन व्यवस्था और बौद्ध धर्म का विस्तार से वर्णन किया।

सीमाएं और चुनौतियां:

- आंतरिक सीमाएं:
 - गुप्त साम्राज्य मुख्यतः उत्तर और मध्य भारत तक सीमित था।
 - दक्षिण भारत में पल्लव, चोल और चेर वंशों का स्वतंत्र अस्तित्व।
 - सीमांत क्षेत्रों में हूनों और अन्य आक्रमणों का दबाव।
- वैश्विक संदर्भ:
 - समुद्री मार्गों पर नियंत्रण की चुनौती।
 - सांस्कृतिक प्रभाव के बावजूद राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करना कठिन।
- सामाजिक सीमाएं:
 - जाति व्यवस्था और छुआछूत जैसी समस्याएं।
 - महिलाओं की स्थिति में अपेक्षित सुधार की कमी।

निष्कर्ष:

गुप्तकाल निस्संदेह भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक विस्तार का एक स्वर्णिम युग था, जिसने दक्षिण-पूर्व एशिया में हिंदू धर्म और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया। फाह्यान के विवरण इस युग की धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक विविधता की पुष्टि करते हैं, परंतु इसकी सीमाएं भी स्पष्ट रूप से उभरती हैं, जैसे कि क्षेत्रीय विस्तार की सीमाएं, सामाजिक विषमताएं और बाहरी आक्रमणों का दबाव।

3: ब्रिटिश शासन के दौरान बारंबार अकाल पड़ने का क्या कारण था?

परिचय:

ब्रिटिश शासन (1757-1947) के दौरान भारत में बारंबार अकाल पड़ना एक गंभीर और व्यापक समस्या थी। ये अकाल केवल प्राकृतिक कारणों से नहीं, बल्कि ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों, प्रशासनिक विफलताओं, स्थानीय उद्योगों के पतन और आर्थिक शोषण का प्रत्यक्ष परिणाम थे। इन अकालों ने भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था को गहरा आघात पहुंचाया, जिससे लाखों लोगों की मृत्यु हुई और सामाजिक-आर्थिक ताना-बाना बुरी तरह प्रभावित हुआ।

मुख्य कारण:

1. औपनिवेशिक कृषि नीतियां:

- नकदी फसलों पर अत्यधिक निर्भरता:
 - ब्रिटिश नीतियों ने भारतीय किसानों को निर्यात के लिए नकदी फसलों (जूट, नील, कपास, चाय, गन्ना) की खेती के लिए मजबूर किया।

- इससे खाद्यान्न उत्पादन घटा, जो अकाल के समय भुखमरी का प्रमुख कारण बना।
- उदाहरण: बंगाल में नील की खेती और बिहार में अफीम की खेती।
- एकफसली प्रणाली (Monoculture):
 - फसल विविधता की कमी से मिट्टी की उर्वरता घटी और खाद्यान्न की कमी हुई।
 - एक बार फसल नष्ट होने पर पूरे क्षेत्र में भुखमरी फैलने का खतरा बढ़ गया।

2. भूमि राजस्व व्यवस्था:

- स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement) - 1793:
 - लॉर्ड कॉर्नवालिस द्वारा लागू इस प्रणाली में जमींदारों को स्थायी रूप से भारी राजस्व देना पड़ता था।
 - अकाल के समय भी कर में कोई छूट नहीं मिलती थी, जिससे किसान और कर्ज में डूबते गए।
- रैयतवाड़ी प्रणाली:
 - किसानों से सीधे राजस्व वसूली, लेकिन अधिक कर दरें और आर्थिक अस्थिरता।
- महालवाड़ी प्रणाली:
 - सामूहिक खेती पर आधारित यह प्रणाली भी अत्यधिक कर वसूली के कारण असफल रही।
- कर्ज का दबाव:
 - किसान अधिक कर चुकाने के लिए साहूकारों से कर्ज लेते थे, जो बाद में उनके लिए बड़ा आर्थिक बोझ बन गया।

3. स्थानीय उद्योगों का विनाश:

- भारतीय कुटीर उद्योगों का पतन:
 - ब्रिटिश मशीन निर्मित वस्तुओं और अन्य उत्पादों से प्रतिस्पर्धा के कारण पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योग नष्ट हो गए।
 - उदाहरण: बंगाल की मशहूर 'ढाका मलमल' उद्योग का पतन।
- कर नीति और व्यापारिक असंतुलन:
 - भारतीय कुटीर उद्योगों पर भारी कर और ब्रिटिश उत्पादों पर सब्सिडी।
- आय के स्रोत का सिमटाव:
 - स्थानीय उद्योगों के नष्ट होने से किसानों और शिल्पकारों की आय में कमी, जिससे अकाल के समय उनकी स्थिति और भी खराब हो गई।

4. प्रशासनिक उदासीनता और नीतिगत विफलताएं:

- अकाल राहत में देरी:
 - ब्रिटिश सरकार का अकाल राहत उपायों में उदासीन रवैया।
 - उदाहरण: 1876-78 का महान अकाल (दक्कन अकाल) में 5 मिलियन से अधिक लोगों की मृत्यु।
- लैसेज़-फेयर नीति:
 - सरकार का न्यूनतम हस्तक्षेप का सिद्धांत, जिसमें बाजार को स्वतः संतुलित होने के लिए छोड़ दिया गया।
- गलत जनगणना:
 - जनसंख्या और खाद्यान्न उत्पादन के बीच बढ़ते अंतर का गलत आकलन।
- भ्रष्टाचार:
 - स्थानीय अधिकारियों द्वारा राहत कार्यों में घोटाले और अनियमितताएं।

5. आर्थिक शोषण और धन निकासी:

- ड्रेन ऑफ वेल्थ (Wealth Drain):
 - भारत से ब्रिटेन की ओर बड़े पैमाने पर धन का स्थानांतरण, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था कमजोर हुई।
- व्यापारिक असंतुलन:
 - कच्चे माल का निर्यात और तैयार माल का आयात, जिससे स्थानीय उद्योगों का पतन।
- कर प्रणाली:
 - अत्यधिक कर वसूली से किसानों की आर्थिक स्थिति खराब हुई।

6. परिवहन और संचार की असमानता:

- रेलवे का व्यापारिक उपयोग:
 - रेलवे नेटवर्क मुख्य रूप से कच्चे माल के निर्यात के लिए डिजाइन किया गया था, न कि अकाल राहत के लिए।
- भंडारण और वितरण की कमी:
 - पर्याप्त गोदाम और आपूर्ति श्रृंखला का अभाव, जिससे संकट के समय खाद्यान्न का वितरण बाधित हुआ।

7. प्राकृतिक और जलवायु कारक:

- अनियमित मानसून:
 - भारतीय कृषि मानसून पर अत्यधिक निर्भर थी।
- सूखा और बाढ़:
 - जल प्रबंधन की कमी और नदी प्रणाली का असंतुलन।
- मिट्टी का कटाव और वनस्पति का हास:
 - वनों की कटाई और मिट्टी की उर्वरता में गिरावट।

ब्रिटिश भारत सरकार के प्रयास:

- फेमिन कमीशन (Famine Commission):
 - 1880 में अकाल निवारण के लिए पहली कमीशन की स्थापना।
 - 1883 में अकाल राहत कोड (Famine Relief Code) का गठन।
- सिंचाई परियोजनाएं:
 - कुछ क्षेत्रों में नहरें और सिंचाई प्रणाली का विकास, लेकिन इसका प्रभाव सीमित रहा।
- रेलवे नेटवर्क:
 - अकाल राहत के नाम पर रेलवे का विस्तार, लेकिन यह अधिकतर व्यापारिक हितों पर केंद्रित था।
- खाद्यान्न भंडारण:
 - कुछ बड़े शहरों में गोदाम बनाए गए, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों तक इसका प्रभाव नहीं पहुंचा।

परिणाम:

- जनसंख्या हास: लाखों लोगों की मृत्यु और जनसंख्या का असामान्य पतन।
- कृषि अर्थव्यवस्था का पतन: किसानों की क्रय शक्ति में गिरावट और भुखमरी।
- सामाजिक असंतोष: ब्रिटिश शासन के प्रति बढ़ता आक्रोश और राष्ट्रीय आंदोलन की प्रेरणा।
- वर्ग संघर्ष: जमींदार और किसानों के बीच संघर्ष, जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण समाज का विघटन।

निष्कर्ष:

ब्रिटिश शासन के दौरान बारंबार अकाल केवल प्राकृतिक आपदाओं का परिणाम नहीं था, बल्कि औपनिवेशिक नीतियों, प्रशासनिक विफलताओं, स्थानीय उद्योगों के पतन और आर्थिक शोषण का प्रत्यक्ष परिणाम था। इन नीतियों ने भारतीय कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गहरे संकट में धकेल दिया, जिसने अंततः स्वतंत्रता संग्राम को भी प्रेरित किया।

4. दक्कन के पठार का भारत के लिए क्या महत्व है?

परिचय:

दक्कन का पठार भारत के दक्षिण-मध्य भाग में स्थित एक विशाल और प्राचीन स्थलरूप है, जो तीन ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ है - पश्चिम में पश्चिमी घाट, पूर्व में पूर्वी घाट और उत्तर में सतपुड़ा और विंध्य पर्वत। यह क्षेत्र भूगर्भीय दृष्टि से भारत का

सबसे पुराना हिस्सा है और इसकी संरचना मुख्यतः प्राचीन कठोर ज्वालामुखीय चट्टानों से बनी है। दक्कन का पठार भारतीय भूगोल, जलवायु, कृषि, खनिज संसाधन और सांस्कृतिक विविधता के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है, परंतु इसके विकास में कई सीमाएं भी हैं।

भौगोलिक महत्व:

1. भौगोलिक विस्तार:
 - लगभग 5 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला यह पठार, भारत के कुल क्षेत्रफल का एक बड़ा हिस्सा है।
 - महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु और छत्तीसगढ़ के बड़े हिस्से शामिल हैं।
 - सीमा: इसकी ऊँचाई औसतन 600-900 मीटर है, जो विभिन्न नदियों और घाटियों से कटा हुआ है।
2. नदी तंत्र:
 - गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, नर्मदा और ताप्ती जैसी महत्वपूर्ण नदियाँ यहां से निकलती हैं।
 - यह नदियाँ कृषि और सिंचाई का प्रमुख स्रोत हैं।
 - सीमा: पश्चिमी घाट से उत्पन्न नदियाँ पूर्वी घाट की ओर बहती हैं, जो बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं।
3. जलवायु:
 - मानसूनी जलवायु का प्रभाव, जिससे यहाँ ग्रीष्मकाल में गर्म और शीतकाल में मध्यम तापमान रहता है।
 - पठारी क्षेत्र होने के कारण जलवायु अपेक्षाकृत शुष्क रहती है।
 - सीमा: वर्षा की अनियमितता और सूखा प्रमुख समस्या है, जिससे कृषि उत्पादन में कमी हो सकती है।

आर्थिक महत्व:

1. खनिज संसाधन:
 - दक्कन का पठार खनिज संपदा से समृद्ध है।
 - प्रमुख खनिज: लोहा, मैंगनीज, बॉक्साइट, सोना, हीरा, तांबा, चूना पत्थर और अभ्रक।
 - सीमा: अत्यधिक खनन से पर्यावरणीय नुकसान और भूमि क्षरण की समस्या।
2. कृषि उत्पादन:
 - काली मिट्टी (रेगुर) के कारण कपास, ज्वार, बाजरा, दालें, मूंगफली, गन्ना और तंबाकू की खेती होती है।
 - पश्चिमी घाट से उत्पन्न नदियों से सिंचाई की सुविधा।
 - सीमा: सूखे की समस्या, मिट्टी का कटाव और जल संसाधनों की कमी।
3. औद्योगिक विकास:
 - खनिज संसाधनों की उपलब्धता के कारण लौह और इस्पात, सीमेंट, ऑटोमोबाइल, और कपड़ा उद्योग का विकास।
 - पुणे, बेंगलुरु, हैदराबाद और नागपुर जैसे औद्योगिक और आईटी हब।
 - सीमा: औद्योगीकरण के कारण वायु और जल प्रदूषण।

पर्यावरणीय महत्व:

1. जैव विविधता:
 - पश्चिमी घाट क्षेत्र को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है।
 - यहाँ दुर्लभ वनस्पतियाँ और वन्य जीव पाए जाते हैं, जैसे शेर, बाघ, हाथी और विविध प्रकार की पक्षी प्रजातियाँ।
 - सीमा: वनक्षेत्र की कटाई, शहरीकरण और खनन के कारण जैव विविधता का क्षरण।
2. मृदा और वनस्पति:
 - काली मिट्टी (रेगुर), लाल मिट्टी और लेटराइट मिट्टी का प्रमुख क्षेत्र।
 - पठार की मिट्टी गहरी और उपजाऊ होती है, जो कपास और दलहनों के लिए उपयुक्त है।
 - सीमा: अत्यधिक फसल चक्र और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से मिट्टी की उर्वरता में गिरावट।

सामरिक और सांस्कृतिक महत्व:

1. सामरिक दृष्टि:
 - ऐतिहासिक रूप से यह क्षेत्र कई साम्राज्यों का केंद्र रहा है, जैसे - मराठा, चालुक्य, विजयनगर और सतवाहन।

- कई महत्वपूर्ण दुर्ग और किले, जैसे - रायगढ़, गोलकोंडा, बीजापुर और दौलताबाद।
- सीमा: नक्सलवाद और आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियाँ।
- 2. संस्कृति और भाषा:
 - यह क्षेत्र कई भाषाओं (मराठी, कन्नड़, तेलुगु, तमिल) और विविध सांस्कृतिक परंपराओं का संगम है।
 - कला, संगीत और नृत्य की समृद्ध परंपरा।
 - सीमा: शहरीकरण के कारण पारंपरिक कला और सांस्कृतिक विरासत का हास।

पर्यटन महत्व:

- प्रमुख आकर्षण:
 - अजंता-एलोरा की गुफाएं, बादामी, हम्पी, मैसूर, गोवा के समुद्र तट।
 - हिल स्टेशन - महाबलेश्वर, कुर्ग, नंदी हिल्स।
- विलक्षण भौगोलिक संरचनाएं:
 - ज्वालामुखीय चट्टानों, गहरी घाटियों और पठारी भू-आकृतियों का अनोखा मिश्रण।
- सीमा: पर्यटन के बढ़ते दबाव से पर्यावरणीय समस्याएं।

निष्कर्ष:

दक्कन का पठार भारत की प्राकृतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विविधता का एक प्रमुख हिस्सा है। इसकी प्राकृतिक संपदा, कृषि उपज, खनिज संसाधन और ऐतिहासिक महत्व इसे भारत के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का प्रमुख आधार बनाते हैं। हालाँकि, यह क्षेत्र पर्यावरणीय क्षरण, जल संकट, मृदा हास और जैव विविधता के क्षरण जैसी कई चुनौतियों का भी सामना कर रहा है, जिन्हें संतुलित विकास के लिए ध्यान में रखना आवश्यक है।

5. चोल की ग्राम व्यवस्था के बारे में बताएं।

परिचय:

चोल साम्राज्य (लगभग 9वीं से 13वीं शताब्दी) दक्षिण भारत का एक शक्तिशाली और संगठित राज्य था, जो प्रशासन, सेना, कला और स्थापत्य के क्षेत्र में अत्यधिक विकसित था। इसके मजबूत और विकेंद्रीकृत प्रशासन का एक प्रमुख अंग थी इसकी 'ग्राम व्यवस्था'। यह प्रणाली स्थानीय स्वशासन, सामाजिक संगठन और आर्थिक प्रबंधन का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने चोल साम्राज्य को सुदृढ़ और सशक्त बनाया। हालाँकि, इसकी कुछ सीमाएं भी थीं, जो समय के साथ इसकी स्थिरता के लिए चुनौती बन गईं।

मुख्य विशेषताएं:

1. स्वायत्तता और स्थानीय स्वशासन:
 - स्वायत्त ग्राम पंचायतें, जहाँ स्थानीय प्रशासन का अधिकार था।
 - उर (सामान्य ग्राम सभा), सभा (ब्राह्मण ग्राम सभा) और नगरम् (व्यापारी समूह)।
2. ग्राम सभा (सभा) का संगठन:
 - सदस्यों का चयन 'कुडवोलई' (लॉटरी) प्रणाली से।
 - समिति प्रणाली, जैसे - समन, एरण्डम, पोनवरियम, पंचवारियम।
3. प्रशासनिक कार्य:
 - कर संग्रह, सिंचाई प्रबंधन, विवाद निपटारा और सामुदायिक विकास।
4. आर्थिक और सामाजिक संरचना:
 - भू-संवर्धन, सिंचाई प्रणाली और व्यापारिक संगठनों का विकास।
5. लेखांकन और दस्तावेजीकरण:
 - ताम्रपत्र, शिलालेख और लेखाकार (कर्णम) द्वारा दस्तावेजीकरण।

सीमाएं:

- जातिगत भेदभाव:
 - सभा का नियंत्रण उच्च जातियों, विशेषकर ब्राह्मणों के हाथ में अधिक था, जिससे निचली जातियों की भागीदारी सीमित थी।
- असमान राजनीतिक शक्ति:
 - अधिकतर प्रशासनिक निर्णय संपन्न और धनी वर्गों द्वारा लिए जाते थे, जिससे सामाजिक असंतुलन बढ़ सकता था।
- वित्तीय दबाव:
 - कठोर कर प्रणाली से किसानों और निम्न वर्गों पर आर्थिक दबाव बढ़ता था।
- प्राकृतिक आपदाएं:
 - अत्यधिक मानसून, सूखा और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएं कृषि उत्पादन को प्रभावित कर सकती थीं।
- प्रभुत्व का खतरा:
 - स्थानीय शक्तियों का अत्यधिक प्रभाव केंद्रीकृत नियंत्रण को कमजोर कर सकता था।
- भ्रष्टाचार और पारदर्शिता की कमी:
 - कुछ स्थानों पर प्रशासनिक प्रक्रियाओं में भ्रष्टाचार और पक्षपात की संभावना रहती थी।

निष्कर्ष:

चोल साम्राज्य की ग्राम व्यवस्था न केवल एक संगठित प्रशासनिक ढांचा थी, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक विकास का आधार भी थी। यह प्रणाली स्थानीय स्वशासन, पारदर्शिता और सामुदायिक भागीदारी का उत्कृष्ट उदाहरण थी, लेकिन जातिगत असमानता, प्रशासनिक जटिलता और स्थानीय प्रभुत्व जैसी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। इसके बावजूद, यह भारतीय प्रशासनिक प्रणाली का एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक अध्याय है।

6. समुद्री धाराओं का मत्स्य उद्योग व तटीय जीवन पर प्रभावों को रेखांकित करें।

परिचय:

समुद्री धाराएं (Ocean Currents) समुद्र के जल का एक दिशा में निरंतर प्रवाहित होना है, जो पृथ्वी के घूर्णन, वायुमंडलीय दबाव, तापमान भिन्नता और महासागरीय लवणता के कारण उत्पन्न होती हैं। ये धाराएं मत्स्य उद्योग और तटीय जीवन पर व्यापक प्रभाव डालती हैं, क्योंकि वे समुद्री पारिस्थितिकी, जलवायु, पोषक तत्वों के वितरण और समुद्री परिवहन को नियंत्रित करती हैं।

मत्स्य उद्योग पर प्रभाव:

1. पोषक तत्वों की आपूर्ति:
 - ठंडी अपवेलिंग धाराएं (जैसे - पेरू, कैलिफोर्निया, बंग्वेला) समुद्री तल से पोषक तत्वों को सतह पर लाती हैं।
 - इससे फाइटोप्लांकटन और जूप्लांकटन का विकास होता है, जो मछलियों के लिए प्रमुख भोजन हैं।
 - उदाहरण: पेरू और नामीबिया के तट, जो दुनिया के सबसे बड़े मत्स्यन क्षेत्रों में से हैं।
2. मछलियों का प्रवास:
 - समुद्री धाराएं तापमान और लवणता को प्रभावित करती हैं, जिससे मछलियों का प्रवास और प्रजनन प्रभावित होता है।
 - उदाहरण: ट्यूना, सार्डीन, सालमन जैसी मछलियां धाराओं का अनुसरण करती हैं।
3. मत्स्यन क्षेत्रों का निर्माण:

- ध्रुवीय और उष्णकटिबंधीय धाराओं के मिलने से मत्स्यन क्षेत्र (फिशिंग ग्राउंड) बनते हैं।
- उदाहरण: ग्रैंड बैंक (अटलांटिक) और डॉगर्स बैंक (उत्तरी सागर)।
- 4. जल तापमान का प्रभाव:
 - गर्म धाराएं (जैसे - गल्फ स्ट्रीम) मछलियों की उत्पादकता बढ़ाती हैं, जबकि ठंडी धाराएं उनके प्रवास को प्रभावित करती हैं।
 - तापमान परिवर्तन से प्रजनन चक्र और खाद्य श्रृंखला प्रभावित होती है।
- 5. प्राकृतिक आपदाएं:
 - अल-नीनो और ला-नीना जैसी धाराओं के बदलाव से मछली उत्पादन में भारी गिरावट आ सकती है।
 - उदाहरण: पेरू का मछली उद्योग, जो अल-नीनो के कारण बार-बार प्रभावित होता है।

तटीय जीवन पर प्रभाव:

1. मौसम और जलवायु:
 - गर्म धाराएं तटीय क्षेत्रों में गर्म और नम जलवायु लाती हैं, जबकि ठंडी धाराएं शुष्क और ठंडी जलवायु बनाती हैं।
 - उदाहरण: ब्रिटेन का हल्का मौसम (गल्फ स्ट्रीम), अटाकामा मरुस्थल का शुष्क क्षेत्र (हम्बोल्ट धारा)।
2. समुद्री परिवहन:
 - धाराओं का सही उपयोग करने से जहाजों की गति बढ़ती है और ईंधन की खपत कम होती है।
 - कुछ धाराएं तूफानों और चक्रवातों का निर्माण करती हैं, जो तटीय जीवन के लिए खतरनाक हो सकता है।
3. जैव विविधता:
 - समुद्री धाराएं पोषक तत्वों के वितरण को प्रभावित करती हैं, जिससे तटीय पारिस्थितिकी तंत्र की संरचना बदलती है।
 - कोरल रीफ, मैंग्रोव और सागर घास जैसे तटीय पारिस्थितिक तंत्र धाराओं पर निर्भर करते हैं।
4. पर्यटन और समुद्री खेल:
 - धाराएं सर्फिंग, स्कूबा डाइविंग और अन्य समुद्री खेलों के लिए आदर्श वातावरण बनाती हैं।
 - उदाहरण: ऑस्ट्रेलिया का ग्रेट बैरियर रीफ।
5. मछुआरों का जीवन:
 - धाराओं के परिवर्तन से मछुआरों की आजीविका प्रभावित होती है।
 - कभी-कभी अत्यधिक ठंडी धाराएं मत्स्यन को बाधित कर सकती हैं।

सीमाएं:

- प्राकृतिक आपदाएं: अल-नीनो, ला-नीना जैसी धाराएं अक्सर विनाशकारी होती हैं।
- समुद्री प्रदूषण: धाराओं के माध्यम से कचरे और प्रदूषकों का बड़े क्षेत्रों में फैलाव।
- जलवायु परिवर्तन: ग्लोबल वार्मिंग से धाराओं का मार्ग और तीव्रता प्रभावित हो रही है।
- मरीन हीटवेव: अत्यधिक गर्म धाराएं समुद्री जीवों के लिए घातक हो सकती हैं।
- जैव विविधता का नुकसान: अत्यधिक मत्स्यन और प्रदूषण से समुद्री पारिस्थितिकी असंतुलित हो सकती है।

निष्कर्ष:

समुद्री धाराएं न केवल मत्स्य उद्योग और तटीय जीवन के लिए आवश्यक हैं, बल्कि वे वैश्विक जलवायु और महासागरीय पारिस्थितिकी में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालाँकि, इनका अत्यधिक शोषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएं तटीय जीवन और समुद्री संसाधनों के लिए गंभीर चुनौती बन रही हैं। इन समस्याओं का समाधान स्थायी मत्स्यन, प्रदूषण नियंत्रण और समुद्री पारिस्थितिकी के संरक्षण से ही संभव है।

7. वैश्वीकरण का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

परिचय:

वैश्वीकरण (Globalization) का अर्थ है विश्व के विभिन्न देशों के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक, तकनीकी और राजनीतिक संबंधों का गहन और व्यापक रूप से जुड़ना। यह 20वीं और 21वीं शताब्दी का एक प्रमुख वैश्विक परिघटना है, जिसने मानव जीवन के लगभग सभी पहलुओं को प्रभावित किया है। हालाँकि, वर्तमान समय में बढ़ते टैरिफ युद्ध (Tariff Wars) और संरक्षणवादी नीतियों (Protectionism) ने वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों को चुनौती दी है, जिससे आर्थिक अस्थिरता और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएं उभर कर सामने आई हैं।

वैश्वीकरण के प्रमुख प्रभाव:

1. आर्थिक प्रभाव:

- आर्थिक विकास:
 - वैश्वीकरण ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा दिया, जिससे कई देशों की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई।
 - चीन, भारत और वियतनाम जैसे देशों में तीव्र आर्थिक वृद्धि हुई।
- रोजगार:
 - वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के विस्तार से रोजगार के नए अवसर पैदा हुए।
 - डिजिटल अर्थव्यवस्था, आईटी और सेवा क्षेत्र में वृद्धि।
- सीमाएं:
 - टैरिफ युद्ध से उत्पादन लागत बढ़ी, जिससे उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें बढ़ीं।
 - उदाहरण: अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध (2018) से इलेक्ट्रॉनिक्स, खिलौने और वस्त्र उद्योग प्रभावित।

2. तकनीकी प्रभाव:

- तकनीकी उन्नति:
 - इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), 5G और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी तकनीकों का तेज विकास।
- डिजिटलीकरण:
 - ई-कॉमर्स, डिजिटल बैंकिंग और फिनटेक का विस्तार।
- सीमाएं:
 - साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और डिजिटल असमानता जैसी चुनौतियाँ।
 - उदाहरण: अमेरिका-चीन 5G प्रौद्योगिकी विवाद।

3. सांस्कृतिक प्रभाव:

- सांस्कृतिक आदान-प्रदान:
 - वैश्विक मनोरंजन, फैशन, भोजन और संगीत का प्रसार।
 - हॉलीवुड, के-पॉप और भारतीय बॉलीवुड का वैश्विक लोकप्रियता।
- बहुसांस्कृतिक समाज:
 - विभिन्न संस्कृतियों का संगम और सांस्कृतिक सहिष्णुता का विकास।
- सीमाएं:
 - स्थानीय संस्कृतियों और भाषाओं का हास।
 - पश्चिमीकरण और उपभोक्तावाद का प्रभाव।

4. सामाजिक प्रभाव:

- शिक्षा और कौशल विकास:
 - अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा और कौशल विकास के अवसर बढ़े।
 - ऑनलाइन शिक्षा और वर्चुअल लर्निंग का विकास।

- पर्यटन और यात्रा:
 - अंतर्राष्ट्रीय यात्रा में वृद्धि और सांस्कृतिक समझ का विस्तार।
- सीमाएं:
 - कोविड-19 महामारी के बाद यात्रा प्रतिबंध और पर्यटन क्षेत्र में गिरावट।
 - सामाजिक असमानता और मानसिक तनाव में वृद्धि।

5. पर्यावरणीय प्रभाव:

- प्राकृतिक संसाधनों का दोहन:
 - औद्योगिकीकरण से प्रदूषण, वनों की कटाई और जैव विविधता का हास।
- जलवायु परिवर्तन:
 - कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि और ग्लोबल वार्मिंग का खतरा।
- सीमाएं:
 - औद्योगिक देशों द्वारा विकासशील देशों पर कार्बन उत्सर्जन का दबाव।
 - उदाहरण: पेरिस जलवायु समझौता (2015) पर विवाद।

टैरिफ युद्ध का प्रभाव:

- वैश्विक व्यापार में व्यवधान:
 - चीन और अमेरिका के बीच व्यापारिक तनाव से वैश्विक अर्थव्यवस्था प्रभावित।
- आपूर्ति श्रृंखला का विघटन:
 - सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोबाइल उद्योग में संकट।
- रोजगार का स्थानांतरण:
 - उत्पादन इकाइयों का पुनर्स्थापन और नौकरियों का स्थानांतरण।
- उपभोक्ता महंगाई:
 - उच्च टैरिफ के कारण वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि।

निष्कर्ष:

वैश्वीकरण ने मानव जीवन में अनेक सकारात्मक बदलाव लाए हैं, जैसे आर्थिक विकास, तकनीकी उन्नति और सांस्कृतिक आदान-प्रदान, लेकिन आधुनिक व्यापार युद्ध और संरक्षणवादी नीतियों ने इसकी स्थिरता को गंभीर चुनौती दी है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए संतुलित वैश्विक व्यापार नीतियां, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और आर्थिक विविधीकरण की आवश्यकता है। केवल तभी हम वैश्वीकरण के फायदों को अधिकतम और हानियों को न्यूनतम कर सकते हैं।

8. नरम दल व गरम दल के बीच अंतर बतायें। नरम दल क्यों असफल हुआ?

परिचय:

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (1857-1947) में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) दो प्रमुख विचारधाराओं में विभाजित थी - नरम दल (Moderates) और गरम दल (Extremists)। इन दोनों गुटों का उद्देश्य एक ही था - भारत की स्वतंत्रता, लेकिन उनके मार्ग, रणनीतियाँ और दृष्टिकोण अलग-अलग थे। नरम दल मुख्यतः संवैधानिक सुधारों और शांतिपूर्ण विरोध में विश्वास रखता था, जबकि गरम दल अधिक आक्रामक और प्रत्यक्ष संघर्ष का समर्थक था।

मुख्य अंतर:

विशेषता	नरम दल (Moderates)	गरम दल (Extremists)
कालखंड	1885-1905 (मुख्यतः)	1905-1920 (मुख्यतः)

प्रमुख नेता	दादाभाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता, सुरेंद्रनाथ बनर्जी	बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, बिपिन चंद्र पाल, अरविंद घोष
रणनीति	संवैधानिक सुधार, याचिका, प्रार्थना और संवाद	सीधी कार्रवाई, स्वदेशी, बहिष्कार और सशस्त्र संघर्ष
उद्देश्य	ब्रिटिश शासन में सुधार और स्वशासन की मांग	पूर्ण स्वतंत्रता (पूर्ण स्वराज)
मुख्य नारे	"संवैधान सुधार और न्याय की अपील"	"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है"
प्रमुख आंदोलन	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रारंभिक सभाएं, प्रार्थना पत्र और बहसें	बंग-भंग विरोध, स्वदेशी आंदोलन, बाँयकॉट और क्रांतिकारी गतिविधियाँ
ब्रिटिश प्रतिक्रिया	नरम रवैया, कभी-कभी मामूली सुधार	कठोर दमन, गिरफ्तारी और दंड

नरम दल की असफलता के कारण:

- धीमी और सीमित दृष्टि:
 - नरम दल का दृष्टिकोण अधिक संवैधानिक और शांतिपूर्ण था, जो ब्रिटिश सरकार के कठोर रवैये के सामने कमजोर साबित हुआ।
 - ब्रिटिश सरकार ने उनकी मांगों को अक्सर नजरअंदाज किया।
- आम जनता का समर्थन न मिलना:
 - नरम दल के नेता मुख्यतः उच्च वर्ग, शिक्षित और अभिजात वर्ग से थे, जो आम जनता की वास्तविक समस्याओं से दूर थे।
 - उनकी याचिका और प्रार्थना की नीतियां जनता को आकर्षित करने में विफल रहीं।
- ब्रिटिश विश्वासघात:
 - 1905 का बंग-भंग, जिसे ब्रिटिश सरकार ने "प्रशासनिक सुविधा" के नाम पर लागू किया, नरम दल की नीतियों की विफलता का प्रतीक बना।
 - ब्रिटिश सरकार ने उनकी याचिकाओं को न केवल अनदेखा किया, बल्कि दमनकारी नीतियाँ भी अपनाईं।
- नेतृत्व में विभाजन:
 - 1907 के सूरत अधिवेशन में नरम दल और गरम दल के बीच स्पष्ट विभाजन हुआ, जिससे कांग्रेस कमजोर हो गई।
 - इससे ब्रिटिश सरकार को विभाजन का लाभ उठाने का अवसर मिला।
- युवाओं में असंतोष:
 - युवा पीढ़ी अधिक आक्रामक और तेज़ बदलाव चाहती थी, जो नरम दल की धीमी रणनीतियों से संतुष्ट नहीं थी।
 - तिलक, लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल जैसे नेता युवाओं में अधिक लोकप्रिय हुए।
- प्रभावहीन सुधार:
 - ब्रिटिश सरकार ने मामूली सुधार (भारतीय परिषद अधिनियम 1892) किए, लेकिन ये भारतीयों की अपेक्षाओं से काफी कम थे।
 - यह निराशा नरम दल के प्रभाव को कमजोर कर गई।
- प्रेस और प्रचार की कमी:
 - गरम दल के विपरीत, नरम दल के पास मजबूत प्रचार तंत्र नहीं था।
 - उनके संदेश व्यापक जनता तक नहीं पहुँच पाते थे।

नरम दल की उपलब्धियाँ:

नरम दल ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीयों में राष्ट्रवाद और राजनीतिक चेतना का संचार किया। दादाभाई नौरोजी ने 'ड्रेन ऑफ वेल्थ' का सिद्धांत प्रस्तुत कर ब्रिटिश शोषण को उजागर किया। गोपाल कृष्ण गोखले जैसे नेताओं ने संवैधानिक सुधारों के माध्यम से भारतीयों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता, शिक्षा का प्रसार और रोजगार के अवसरों की वकालत की। भारतीय परिषद अधिनियम 1892 और 1909 का मार्ले-मिंटो सुधार आंशिक रूप से उनके प्रयासों का परिणाम था।

निष्कर्ष:

नरम दल ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखी, लेकिन उनकी शांतिपूर्ण और संवैधानिक नीतियाँ ब्रिटिश साम्राज्यवाद के सामने कमजोर साबित हुईं। उनकी असफलता ने गरम दल के अधिक आक्रामक और क्रांतिकारी दृष्टिकोण को प्रेरित किया, जिसने बाद में गांधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन को और अधिक सशक्त बनाया। हालाँकि, नरम दल का योगदान महत्वपूर्ण था, क्योंकि उन्होंने भारतीय जनमानस में राष्ट्रवाद की भावना को जागृत किया और एक संगठित राजनीतिक आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया।

9. जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए सरकार के प्रयासों को बतायें।

परिचय:

जलवायु परिवर्तन (Climate Change) 21वीं सदी की सबसे गंभीर वैश्विक चुनौतियों में से एक है, जिसका प्रभाव पर्यावरण, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य और समाज पर व्यापक रूप से देखा जा रहा है। इससे न केवल तापमान में वृद्धि हो रही है, बल्कि समुद्र का स्तर बढ़ना, चरम मौसम की घटनाएं, जैव विविधता का ह्रास और कृषि उत्पादन में गिरावट जैसी समस्याएं भी उत्पन्न हो रही हैं। इन प्रभावों को कम करने के लिए सरकारें स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर कई नीतिगत कदम उठा रही हैं।

भारत सरकार के प्रयास:

1. राष्ट्रीय नीतियाँ और योजनाएं:

- राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPCC) (2008):
 - जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आठ मिशनों पर आधारित, जैसे - सौर ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता, जल संरक्षण, हरित भारत और हिमालय पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण।
- राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन (2023):
 - भारत को हरित हाइड्रोजन के उत्पादन और निर्यात में अग्रणी बनाने के लिए।
- राष्ट्रीय जैव विविधता कार्य योजना:
 - पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा और जैव विविधता के संरक्षण के लिए।

2. नवीकरणीय ऊर्जा और कार्बन कटौती:

- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA):
 - 2015 में भारत और फ्रांस की पहल, जो सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।
- 2030 का लक्ष्य:
 - 500 GW नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य।
- ऊर्जा दक्षता:
 - LED बल्बों का वितरण (उजाला योजना), सौर ऊर्जा संयंत्र और इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रोत्साहन।
- कार्बन न्यूट्रलिटी का लक्ष्य:
 - 2070 तक नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन प्राप्त करने का लक्ष्य।

3. वन और हरित आवरण का संरक्षण:

- CAMPA फंड (Compensatory Afforestation Fund Management and Planning Authority):
 - वनीकरण और वन संरक्षण के लिए।
- जलवायु अनुकूल कृषि:
 - मृदा स्वास्थ्य कार्ड, जैविक खेती और जल संरक्षण।

- हरित भारत मिशन:
 - वन आवरण को बढ़ाने और पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्स्थापित करने के लिए।

4. आपदा प्रबंधन और अनुकूलन:

- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन योजना (NDMP):
 - जलवायु आपदाओं जैसे बाढ़, चक्रवात, सूखा और तटीय कटाव से निपटने के लिए।
- जल शक्ति अभियान:
 - जल संरक्षण और जल स्रोतों के पुनर्स्थापन के लिए।
- गंगा कायाकल्प योजना (नमामि गंगे):
 - गंगा नदी की सफाई और संरक्षण।

5. वित्तीय उपाय और हरित कर:

- कार्बन टैक्स और ग्रीन बॉन्ड:
 - कार्बन उत्सर्जन को कम करने और हरित परियोजनाओं के लिए वित्त जुटाने के लिए।
- पंचामृत:
 - ग्लासगो COP26 में प्रधानमंत्री द्वारा घोषित पांच प्रमुख जलवायु प्रतिज्ञाएँ।

वैश्विक स्तर पर प्रयास:

1. पेरिस जलवायु समझौता (2015):

- भारत इस ऐतिहासिक समझौते का एक प्रमुख हस्ताक्षरकर्ता है।
- वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5°C तक सीमित करने का लक्ष्य।

2. UNFCCC और COP (Conference of Parties):

- जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) का समर्थन।
- COP26 (ग्लासगो, 2021) में पंचामृत लक्ष्य की घोषणा।

3. आपदा जोखिम न्यूनीकरण (Sendai Framework):

- 2015-2030 के लिए वैश्विक आपदा जोखिम प्रबंधन।

चुनौतियाँ और सीमाएँ:

- वित्तीय चुनौतियाँ: हरित प्रौद्योगिकियों के लिए उच्च निवेश लागत।
- सामाजिक और राजनीतिक बाधाएँ: नीतियों के कार्यान्वयन में क्षेत्रीय असमानताएँ।
- तकनीकी समस्याएँ: स्वच्छ ऊर्जा के उत्पादन और भंडारण में समस्याएँ।
- प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन: जल, भूमि और खनिज संसाधनों का अनियंत्रित उपयोग।

निष्कर्ष:

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए सरकार के ये प्रयास महत्वपूर्ण हैं, लेकिन इनके सफल कार्यान्वयन के लिए स्थानीय समुदायों, निजी क्षेत्र और वैश्विक साझेदारों का सक्रिय सहयोग भी आवश्यक है। यदि ये नीतियाँ प्रभावी ढंग से लागू की जाएँ, तो न केवल पर्यावरणीय संरक्षण सुनिश्चित हो सकता है, बल्कि सतत विकास के लक्ष्यों को भी प्राप्त किया जा सकता है।

10: मानसून का भारत के लिए क्या महत्व है?

परिचय:

भारत एक मानसूनी जलवायु (Monsoonal Climate) वाला देश है, जहाँ दक्षिण-पश्चिम मानसून (Southwest Monsoon) मुख्य वर्षा का स्रोत है। यह मौसमीय घटना भारतीय कृषि, अर्थव्यवस्था, जल संसाधन, पारिस्थितिकी और सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है। मानसून न केवल भारत की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन का भी एक अभिन्न हिस्सा है।

भारत के लिए मानसून का महत्व:

1. कृषि और खाद्य सुरक्षा:

- भारत की लगभग 60% कृषि मानसून पर निर्भर है।
- खरीफ फसलें (धान, ज्वार, मक्का, सोयाबीन, मूंगफली, कपास) मानसून के पानी से ही उगाई जाती हैं।
- जल संसाधनों की उपलब्धता से सिंचाई और भूजल पुनर्भरण होता है।
- कमजोर मानसून का सीधा असर कृषि उत्पादन और खाद्य सुरक्षा पर पड़ता है।

2. आर्थिक महत्व:

- भारत की GDP का बड़ा हिस्सा कृषि से आता है, जो मानसून पर निर्भर है।
- मानसून का प्रभाव कृषि निर्यात, रोजगार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर गहरा होता है।
- खाद्य महंगाई, औद्योगिक उत्पादन और बाजार की स्थिरता मानसून से प्रभावित होती है।
- उदाहरण: 2009 का सूखा, जब खराब मानसून के कारण भारत की GDP में गिरावट आई।

3. जल संसाधन और बिजली उत्पादन:

- नदियाँ, जलाशय, झीलें और भूजल का पुनर्भरण मानसून पर निर्भर करता है।
- हाइड्रोपावर और थर्मल पावर संयंत्रों के लिए जल संसाधन आवश्यक हैं।
- बांध और जलाशयों का स्तर मानसूनी वर्षा से तय होता है, जो ऊर्जा उत्पादन को प्रभावित करता है।

4. पारिस्थितिकी और जैव विविधता:

- भारतीय वन, घास के मैदान, मैंग्रोव और कोरल रीफ जैसे पारिस्थितिकी तंत्र मानसून से प्रभावित होते हैं।
- वर्षा जल से नदियाँ और झीलें पुनर्जीवित होती हैं, जिससे जलीय पारिस्थितिकी सशक्त होती है।
- मानसून के आगमन के साथ ही कई वन्यजीवों का प्रजनन चक्र शुरू होता है।

5. सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व:

- भारतीय त्योहार, लोकगीत, नृत्य और साहित्य मानसून से प्रेरित हैं।
- मानसून के स्वागत में 'तीज', 'बिहू', 'ओणम' जैसे पर्व मनाए जाते हैं।
- ग्रामीण जीवन और फसल कटाई के समय की परंपराएं मानसून से गहराई से जुड़ी हैं।

6. जलवायु और मौसम:

- मानसून भारतीय उपमहाद्वीप की जलवायु को नियंत्रित करता है।
- यह तापमान, आर्द्रता और वायुमंडलीय दबाव को संतुलित करता है।
- मानसून की गति और तीव्रता से सूखा, बाढ़ और चक्रवात जैसी आपदाएँ प्रभावित होती हैं।

सीमाएं:

- असामान्यता: कमजोर या असामान्य मानसून से सूखा और कृषि संकट हो सकता है।
- प्राकृतिक आपदाएँ: अत्यधिक वर्षा से बाढ़, भूस्खलन और मिट्टी का कटाव।
- जलवायु परिवर्तन: मानसून की अनिश्चितता बढ़ रही है, जिससे कृषि और जल संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है।
- प्रबंधन की चुनौतियाँ: जल संसाधनों का अनियंत्रित उपयोग और सिंचाई की कमी।

निष्कर्ष:

भारत के लिए मानसून केवल एक मौसमीय घटना नहीं, बल्कि इसका आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक ताना-बाना इससे गहराई से जुड़ा हुआ है। यह भारत की खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण विकास और जल संसाधनों का प्रमुख स्रोत है। हालाँकि, मानसून की अनिश्चितता और जलवायु परिवर्तन के खतरे को देखते हुए, जल संसाधनों का कुशल प्रबंधन और आपदा तैयारी अत्यंत आवश्यक है।

11. राज्यों के पुनर्गठन ने कई समस्याओं को जन्म दिया है। आप कहां तक इससे सहमत हैं?

परिचय:

स्वतंत्रता के बाद, भारत में राज्यों का पुनर्गठन एक जटिल और संवेदनशील प्रक्रिया रही है। 1956 में राज्यों के पुनर्गठन अधिनियम (States Reorganisation Act) के माध्यम से भाषाई, सांस्कृतिक और प्रशासनिक कारकों के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन किया गया था। हालाँकि, इस प्रक्रिया ने कुछ क्षेत्रों में विकास और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा दिया, लेकिन इसके साथ ही कई समस्याएं भी उत्पन्न हुईं, जो आज भी भारतीय राजनीति, प्रशासन और समाज के सामने चुनौती बनी हुई हैं।

राज्यों के पुनर्गठन से उत्पन्न प्रमुख समस्याएं:

1. क्षेत्रीय असमानता और आर्थिक विषमता:

- नए राज्यों के निर्माण से कई बार क्षेत्रीय असमानता बढ़ी है।
- छोटे और कम विकसित राज्यों को वित्तीय और आर्थिक रूप से सशक्त बनाना एक चुनौती है।
- उदाहरण: झारखंड, छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड जैसे राज्यों को विकास और औद्योगिकीकरण में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

2. भाषाई और सांस्कृतिक संघर्ष:

- भाषाई आधार पर राज्यों का गठन कभी-कभी सांस्कृतिक और क्षेत्रीय तनाव को बढ़ावा देता है।
- स्थानीय भाषाओं की पहचान और सुरक्षा को लेकर संघर्ष होते हैं।
- उदाहरण: महाराष्ट्र और कर्नाटक के बीच बेलगाम सीमा विवाद।

3. राजनीतिक अस्थिरता:

- छोटे राज्यों में राजनीतिक अस्थिरता और गठबंधन सरकारें अधिक आम होती हैं।
- क्षेत्रीय दलों का प्रभाव बढ़ता है, जिससे राष्ट्रीय एकता पर असर पड़ सकता है।
- उदाहरण: गोवा, मणिपुर और झारखंड में बार-बार सरकार बदलने की घटनाएं।

4. प्रशासनिक जटिलताएं:

- नए राज्यों के गठन से प्रशासनिक ढांचे का पुनर्गठन, नौकरशाही का विस्तार और संसाधनों का पुनर्वितरण कठिन होता है।

- सीमावर्ती विवाद और प्रशासनिक संघर्ष बढ़ते हैं।
- उदाहरण: तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के बीच हैदराबाद की राजधानी का मुद्दा।

5. आंतरिक सुरक्षा और नक्सलवाद:

- कुछ नए राज्यों में नक्सलवाद, आंतरिक विद्रोह और उग्रवाद की समस्या अधिक गहराई से उभरी है।
- उदाहरण: छत्तीसगढ़, झारखंड और ओडिशा में माओवादी गतिविधियाँ।

6. संसाधनों का असमान वितरण:

- प्राकृतिक संसाधनों, जल, खनिज और वन्य संपदा का असमान वितरण।
- राज्यों के बीच जल विवाद और सीमावर्ती संघर्ष।
- उदाहरण: कावेरी जल विवाद (तमिलनाडु-कर्नाटक) और सतलुज-यमुना लिंक विवाद (हरियाणा-पंजाब)।

सकारात्मक पक्ष:

- स्थानीय विकास: छोटे राज्यों में प्रशासनिक दक्षता और विकास कार्यों में तेजी आती है।
- राजनीतिक प्रतिनिधित्व: क्षेत्रीय पहचान और भाषा की रक्षा होती है।
- प्रशासनिक कुशलता: छोटे राज्यों में निर्णय प्रक्रिया तेज होती है।
- आर्थिक सुधार: नए राज्य औद्योगिकीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास में अधिक ध्यान दे सकते हैं।
- संस्कृति और पहचान का संरक्षण: स्थानीय भाषाओं और सांस्कृतिक परंपराओं को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष:

राज्यों का पुनर्गठन एक आवश्यक और संवेदनशील प्रक्रिया है, जिसने कई समस्याओं को जन्म दिया है, लेकिन इसके सकारात्मक प्रभाव भी महत्वपूर्ण हैं। यह क्षेत्रीय संतुलन, आर्थिक विकास और प्रशासनिक कुशलता के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, लेकिन इसे प्रभावी बनाने के लिए संसाधनों का उचित वितरण, राजनीतिक स्थिरता और राष्ट्रीय एकता को प्राथमिकता देनी होगी। केवल संतुलित और समावेशी विकास से ही इन चुनौतियों का समाधान संभव है।

12. भारतीय संस्कृति की सततता अक्षुण्ण रही है। कारण बतायें।

परिचय:

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और निरंतर जीवित संस्कृतियों में से एक है। इसकी जड़ें सिंधु घाटी सभ्यता (3300-1300 ईसा पूर्व) से लेकर वैदिक काल, मौर्य, गुप्त, मुगल और ब्रिटिश काल तक फैली हुई हैं। इतने लंबे इतिहास के बावजूद भारतीय संस्कृति आज भी जीवंत और प्रासंगिक है। इसका कारण इसकी अद्वितीय सहिष्णुता, विविधता, लचीला दृष्टिकोण और आत्मसात करने की क्षमता है।

भारतीय संस्कृति की सततता के प्रमुख कारण:

1. सहिष्णुता और बहुलवाद:

- भारतीय संस्कृति का मूल तत्व सहिष्णुता, सह-अस्तित्व और विविधता को सम्मान देना है।
- यहाँ विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातियों और परंपराओं का समावेश हुआ है।
- उदाहरण: हिंदू, बौद्ध, जैन, सिख, इस्लाम, ईसाई और पारसी धर्मों का शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।

2. आत्मसात और अनुकूलन की क्षमता:

- भारतीय संस्कृति ने समय-समय पर विदेशी प्रभावों को आत्मसात किया और अपने भीतर समाहित कर लिया।
- फारसी, ग्रीक, कुशान, हूण, मुगल और यूरोपीय संस्कृतियों से प्रभावित होकर भी अपनी मौलिकता बनाए रखी।
- उदाहरण: मुगल स्थापत्य कला, फारसी संगीत और अंग्रेजी भाषा का भारतीय समाज में समावेश।

3. आध्यात्मिकता और धर्म:

- भारतीय संस्कृति की जड़ें गहरे आध्यात्मिक और धार्मिक विचारों में निहित हैं।
- वेद, उपनिषद, भगवद गीता, रामायण, महाभारत और त्रिपिटक जैसे प्राचीन ग्रंथों ने इसका मार्गदर्शन किया है।
- उदाहरण: योग, ध्यान और वेदांत दर्शन की वैश्विक लोकप्रियता।

4. सामाजिक संस्थाएं और मूल्य:

- संयुक्त परिवार, गुरु-शिष्य परंपरा, अतिथि देवो भवः, करुणा और अहिंसा जैसे मूल्य सदियों से भारतीय समाज को जोड़ते आए हैं।
- उदाहरण: महात्मा गांधी का अहिंसा और सत्याग्रह का सिद्धांत।

5. सांस्कृतिक विविधता और क्षेत्रीयता:

- भारत में भौगोलिक विविधता के कारण विभिन्न भाषाएं, लोक कलाएं, नृत्य, संगीत और भोजन की परंपराएं विकसित हुईं।
- उदाहरण: भरतनाट्यम, कथक, कुचिपुड़ी, बिहू, गरबा, ओडिसी जैसी नृत्य शैलियाँ।

6. साहित्य, कला और स्थापत्य:

- भारतीय साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला की महान परंपराएँ।
- उदाहरण: अजंता-एलोरा की गुफाएँ, खजुराहो के मंदिर, तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर।

7. मजबूत पारिवारिक और सामाजिक संरचना:

- परिवार और समुदाय आधारित सामाजिक संरचना, जो पीढ़ी दर पीढ़ी मूल्यों और परंपराओं का हस्तांतरण करती है।
- उदाहरण: विवाह, जन्म, मृत्यु और त्योहारों से जुड़े संस्कार।

8. पुनर्जागरण और पुनरुत्थान:

- हर संकट के बाद भारतीय संस्कृति ने स्वयं को पुनर्जीवित किया है।
- उदाहरण: बौद्ध धर्म के पतन के बाद हिंदू धर्म का पुनरुत्थान, औपनिवेशिक काल में स्वतंत्रता संग्राम।

9. वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टिकोण:

- प्राचीन भारतीय विज्ञान, गणित, चिकित्सा और खगोलशास्त्र की उन्नति।
- उदाहरण: शून्य, दशमलव पद्धति, आयुर्वेद, योग और ज्योतिष।

सीमाएं:

- आधुनिकता का प्रभाव:
 - पश्चिमीकरण, उपभोक्तावाद और आधुनिक जीवनशैली से पारंपरिक मूल्यों पर प्रभाव।
 - विशेषकर युवा पीढ़ी में पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव।
- सामाजिक असमानता:
 - जाति, धर्म, लिंग भेदभाव और वर्गीय असमानता जैसी समस्याएं।
 - आर्थिक और शैक्षिक विषमताएँ।

- भाषाई विविधता:
 - 1600 से अधिक भाषाएँ और बोलियाँ होने के कारण संचार की चुनौतियाँ।
 - कई भाषाएँ लुप्त होने के कगार पर।
- आर्थिक और सांस्कृतिक एकीकरण:
 - वैश्वीकरण और उदारीकरण से स्थानीय कारीगरों और परंपरागत उद्योगों पर दबाव।
 - सांस्कृतिक पहचान का संकट।

निष्कर्ष:

भारतीय संस्कृति की सततता का मूल कारण इसकी सहिष्णुता, लचीलापन, आत्मसात करने की क्षमता और गहरी जड़ें हैं। यह न केवल प्राचीन परंपराओं को संरक्षित करती है, बल्कि आधुनिकता को भी अपनाती है। यही कारण है कि भारत की सांस्कृतिक धारा सदियों से अक्षुण्ण और जीवंत बनी हुई है। हालाँकि, इसे आधुनिक चुनौतियों से बचाने के लिए सतत प्रयासों की आवश्यकता है।

13. सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन अपनी अंतर्वस्तु में राष्ट्रवादी थे। कैसे?

परिचय:

19वीं और 20वीं शताब्दी में भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन का उदय हुआ, जिसने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और सामाजिक असमानताओं को समाप्त करने का प्रयास किया। ये आंदोलन न केवल सामाजिक सुधार के प्रतीक थे, बल्कि उनकी अंतर्वस्तु में एक गहरा राष्ट्रवादी दृष्टिकोण भी समाहित था। इन आंदोलनों ने भारतीय समाज को जागरूक और संगठित किया, जिससे बाद में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन को भी व्यापक समर्थन मिला।

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों का राष्ट्रवादी दृष्टिकोण:

1. भारतीय गौरव और सांस्कृतिक पुनर्जागरण:

- इन आंदोलनों ने भारतीय सभ्यता, संस्कृति और इतिहास के गौरव को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया।
- पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध भारतीय समाज की आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक पहचान को बढ़ावा दिया।
- उदाहरण: आर्य समाज (स्वामी दयानंद सरस्वती) का 'वेदों की ओर लौटो' का नारा, स्वामी विवेकानंद का शिकागो भाषण।

2. आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता का संदेश:

- इन आंदोलनों ने भारतीयों में आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और स्वाभिमान की भावना को जागृत किया।
- विदेशी शासकों द्वारा लगाए गए "पिछड़े और असभ्य" के लेबल का खंडन किया।
- उदाहरण: स्वामी विवेकानंद का "उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत" का आह्वान।

3. जातिगत और सामाजिक समानता:

- इन आंदोलनों ने जातिवाद, छुआछूत और सामाजिक असमानता के खिलाफ आवाज उठाई, जो एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक था।
- उदाहरण: सत्यशोधक समाज (ज्योतिबा फुले), अंबेडकर का दलित आंदोलन।

4. महिला सशक्तिकरण:

- महिलाओं की शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह निषेध और संपत्ति अधिकारों के लिए संघर्ष।

- महिलाओं के सशक्तिकरण ने उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।
- उदाहरण: सावित्रीबाई फुले, पंडिता रमाबाई और आनंदीबाई जोशी का योगदान।

5. धार्मिक सुधार और सांप्रदायिक एकता:

- धार्मिक पुनर्जागरण के माध्यम से हिंदू, मुस्लिम, सिख और अन्य समुदायों के बीच एकता का प्रयास।
- उदाहरण: ब्रह्म समाज (राजा राममोहन राय), प्रार्थना समाज और अलिगढ़ आंदोलन (सर सैयद अहमद खान)।

6. स्वदेशी और आर्थिक आत्मनिर्भरता:

- विदेशी वस्तुओं और उत्पादों के बहिष्कार का समर्थन।
- भारतीय उद्योगों और कुटीर उद्योगों के पुनरुत्थान पर बल।
- उदाहरण: स्वदेशी आंदोलन (1905) और दयानंद सरस्वती का 'स्वराज्य' का आह्वान।

7. आधुनिक शिक्षा का प्रचार:

- अंग्रेजी शिक्षा के साथ-साथ भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रणाली का समर्थन।
- शिक्षित समाज ही स्वतंत्रता संग्राम में सशक्त भूमिका निभा सकता था।
- उदाहरण: विद्यासागर, गोपाल कृष्ण गोखले और राजा राममोहन राय।

8. राष्ट्रीय चेतना का विकास:

- इन आंदोलनों ने लोगों में राष्ट्रीय चेतना, एकता और देशभक्ति की भावना को बढ़ावा दिया।
- उदाहरण: विवेकानंद का 'उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत' का आह्वान, बाल गंगाधर तिलक का 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा।

सीमाएं:

- धार्मिक असहिष्णुता:
 - कुछ आंदोलनों ने सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया, जिससे सामाजिक तनाव बढ़ा।
 - उदाहरण: आर्य समाज और मुसलमानों के बीच टकराव।
- क्षेत्रीय सीमाएँ:
 - कई सुधार आंदोलन केवल क्षेत्रीय स्तर पर सीमित रहे, जिससे उनका प्रभाव व्यापक नहीं हो पाया।
 - उदाहरण: सत्यशोधक समाज का मुख्य प्रभाव महाराष्ट्र तक सीमित था।
- निम्न जातियों का बहिष्कार:
 - कुछ आंदोलन उच्च जातियों तक सीमित रहे, जिससे निम्न जातियों की समस्याएँ अनदेखी रहीं।
 - उदाहरण: ब्रह्म समाज का मुख्यतः उच्च जातियों तक सीमित रहना।
- पश्चिमी प्रभाव:
 - कुछ आंदोलन अति-पश्चिमीकरण के प्रभाव में आ गए, जिससे भारतीय संस्कृति का हास हुआ।
 - उदाहरण: ब्रह्म समाज का पश्चिमी विचारों से अत्यधिक प्रभावित होना।

निष्कर्ष:

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की अंतर्वस्तु में राष्ट्रवाद स्पष्ट रूप से विद्यमान था। इन आंदोलनों ने भारतीय समाज को आत्मविश्वासी, संगठित और सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाया, जिससे स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक जनसमर्थन मिला। इन आंदोलनों ने न केवल समाज को जागरूक किया, बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद की नींव भी मजबूत की, जो आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम का आधार बनी।

14. एशिया में सबसे ज्यादा जल संसाधन होते हुए भी भारत जल संकट से जूझ रहा है। आप कहां तक इस बात से सहमत हैं?

परिचय:

भारत, अपने विशाल जल संसाधनों के बावजूद, एक गंभीर जल संकट का सामना कर रहा है। भारत में लगभग 4% वैश्विक जल संसाधन हैं, जबकि इसकी जनसंख्या विश्व की 18% है। विश्व बैंक के अनुसार, भारत दुनिया का सबसे बड़ा भूजल उपयोगकर्ता है, जो प्रति वर्ष लगभग 230 बिलियन घन मीटर भूजल का दोहन करता है। इसके बावजूद, NITI Aayog की 2018 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत का लगभग 40% जनसंख्या 2030 तक 'गंभीर जल संकट' का सामना कर सकती है। यह स्थिति अन्य एशियाई देशों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण है, जो भविष्य में भारत के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय स्थिरता को खतरे में डाल सकती है।

भारत में जल संकट के प्रमुख कारण:

1. असमान वितरण और अत्यधिक दोहन:

- भारत में कुल वार्षिक जल उपलब्धता लगभग 1869 बिलियन घन मीटर (BCM) है, लेकिन इसका केवल 1123 BCM ही उपयोग योग्य है।
- देश के लगभग 85% पेयजल और 60% सिंचाई की आवश्यकता भूजल से पूरी होती है।
- उदाहरण: पंजाब और हरियाणा में धान की खेती के कारण भूजल स्तर 0.5-1 मीटर प्रति वर्ष की दर से गिर रहा है।

2. जलवायु परिवर्तन और अनियमित मानसून:

- भारत की कृषि मानसून पर अत्यधिक निर्भर है, जिससे वर्षा में कमी से सूखा और जल संकट उत्पन्न होता है।
- उदाहरण: महाराष्ट्र, राजस्थान और कर्नाटक में लगातार सूखे की स्थिति।
- तुलना: जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों ने जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन में बेहतर प्रबंधन किया है।

3. जल प्रदूषण:

- भारत की 70% सतही जल स्रोत प्रदूषित हैं।
- औद्योगिक कचरा, घरेलू अपशिष्ट और कृषि रसायनों का अत्यधिक उपयोग प्रमुख कारण हैं।
- उदाहरण: गंगा, यमुना और गोदावरी जैसी नदियाँ गंभीर रूप से प्रदूषित हैं।
- तुलना: सिंगापुर ने जल पुनर्चक्रण (NEWater) तकनीक के माध्यम से अपने जल संकट को काफी हद तक नियंत्रित किया है।

4. जल प्रबंधन की कमी:

- जल संसाधनों का कुशल प्रबंधन न होने से जल संकट गहराता जा रहा है।
- तालाब, झील, कुंआँ और जलाशयों का अतिक्रमण और उपेक्षा।
- उदाहरण: चेन्नई और बेंगलुरु जैसे शहरों में पानी की भारी कमी।
- तुलना: इज़राइल ने ड्रिप सिंचाई और जल पुनर्चक्रण के माध्यम से जल संकट को नियंत्रित किया है।

5. कृषि में जल की बर्बादी:

- भारत की 80% जल खपत कृषि में होती है, जिसमें अत्यधिक जलगहन फसलें (चावल, गन्ना) शामिल हैं।
- आधुनिक सिंचाई तकनीकों का सीमित उपयोग।
- उदाहरण: महाराष्ट्र में गन्ने की खेती के कारण भूजल स्तर में गिरावट।
- तुलना: ऑस्ट्रेलिया ने "स्मार्ट इरिगेशन" तकनीक अपनाई है, जिससे जल की खपत में कमी आई है।

6. सीमावर्ती जल विवाद:

- राज्यों और देशों के बीच जल संसाधनों का बंटवारा विवाद का कारण बनता है।
- उदाहरण: कावेरी जल विवाद (कर्नाटक-तमिलनाडु), सतलुज-यमुना लिंक विवाद (पंजाब-हरियाणा)।
- तुलना: यूरोपीय देशों ने अंतरराष्ट्रीय नदियों के साझा उपयोग के लिए बेहतर जल प्रबंधन नीतियाँ बनाई हैं।

सरकार के प्रयास:

- जल जीवन मिशन (2019):
 - हर घर तक सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल पहुँचाने का लक्ष्य।
 - 2024 तक 18 करोड़ ग्रामीण घरों को पाइप के माध्यम से पानी की आपूर्ति का लक्ष्य।
- नमामि गंगे (2014):
 - गंगा नदी की सफाई और संरक्षण के लिए 20,000 करोड़ रुपये का बजट।
 - 364 से अधिक परियोजनाएँ शुरू की गईं।
- अटल भूजल योजना (2019):
 - 6000 करोड़ रुपये की लागत से भूजल स्तर को सुधारने का लक्ष्य।
 - गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में लागू।
- जल शक्ति अभियान (2019):
 - वर्षा जल संचयन, जल निकायों का पुनरुद्धार और सिंचाई सुधार।
 - 255 जिलों में लागू किया गया।
- राष्ट्रीय जल नीति (2012):
 - जल संरक्षण, पुनर्भरण और जल प्रबंधन के लिए व्यापक नीतियाँ।
 - 2023 में नई जल नीति की तैयारी।
- हरित भारत मिशन:
 - वनों की कटाई को रोकना और जलवायु परिवर्तन से निपटना।

सीमाएं:

- आबादी का दबाव:
 - भारत की 1.4 अरब की विशाल जनसंख्या जल संसाधनों पर भारी दबाव डालती है।
 - जल की मांग हर साल 2-3% की दर से बढ़ रही है।
- आर्थिक और सामाजिक असमानता:
 - गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों में जल की अधिक कमी।
 - शहरों में पानी का अत्यधिक उपयोग, जबकि ग्रामीण इलाकों में जल संकट।
- तकनीकी और प्रबंधन की कमी:
 - जल संरक्षण तकनीकों का सीमित उपयोग।
 - जल आपूर्ति और वितरण में बड़े पैमाने पर बर्बादी।
- प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन:
 - अत्यधिक भूजल दोहन और जल स्रोतों का अवैज्ञानिक दोहन।
 - नदियों का अतिक्रमण और जलाशयों की उपेक्षा।

निष्कर्ष:

भारत, भले ही जल संसाधनों में समृद्ध हो, लेकिन असमान वितरण, अत्यधिक दोहन, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के कारण एक गहरे जल संकट से जूझ रहा है। अन्य देशों से सीख लेकर, जल संरक्षण, पुनर्भरण, प्रबंधन और सामुदायिक भागीदारी पर ध्यान देना आवश्यक है। साथ ही, जल-साक्षरता और तकनीकी नवाचारों के माध्यम से जल संसाधनों का सतत और न्यायसंगत उपयोग सुनिश्चित करना होगा।

15. प्रादेशिक संसाधन आधारित विनिर्माण की रणनीति कहां तक उचित है?

परिचय:

प्रादेशिक संसाधन आधारित विनिर्माण (Regionally Resource-Based Manufacturing) का तात्पर्य है, किसी क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक, खनिज और मानव संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हुए वहां औद्योगिक विकास करना। यह रणनीति न केवल क्षेत्रीय आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है, बल्कि देश की समग्र औद्योगिक क्षमता को भी सशक्त बनाती है। हालाँकि, इस दृष्टिकोण की कुछ सीमाएँ और चुनौतियाँ भी हैं, जिन पर विचार करना आवश्यक है।

प्रादेशिक संसाधन आधारित विनिर्माण की उपयुक्तता:

1. क्षेत्रीय आर्थिक विकास:

- यह रणनीति क्षेत्र की प्राकृतिक और मानव संसाधनों का अधिकतम उपयोग कर स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाती है।
- उदाहरण: झारखंड और ओडिशा में लौह अयस्क और कोयले के आधार पर इस्पात उद्योग का विकास।
- लाभ: रोजगार सृजन, क्षेत्रीय आय में वृद्धि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सशक्तिकरण।

2. निर्यात और विदेशी मुद्रा अर्जन:

- क्षेत्रीय संसाधनों का कुशल उपयोग वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त दिला सकता है।
- उदाहरण: गुजरात में पेट्रोकेमिकल्स और रसायन उद्योग का विकास।
- लाभ: व्यापार संतुलन में सुधार और विदेशी मुद्रा का अर्जन।

3. लागत में कमी:

- संसाधनों के नजदीक उद्योग स्थापित करने से कच्चे माल के परिवहन पर खर्च कम होता है।
- उदाहरण: छत्तीसगढ़ में सीमेंट उद्योग, जो स्थानीय चूना पत्थर पर आधारित है।
- लाभ: उत्पादन लागत में कमी और अधिक मुनाफा।

4. क्षेत्रीय असमानता में कमी:

- पिछड़े और आदिवासी क्षेत्रों में औद्योगिकीकरण से क्षेत्रीय असमानता में कमी आती है।
- उदाहरण: उत्तर-पूर्व भारत में बांस, चाय और हस्तशिल्प उद्योग का विकास।
- लाभ: क्षेत्रीय संतुलन और सामाजिक-आर्थिक समावेश।

5. पर्यावरणीय लाभ:

- संसाधनों के स्थानीय उपयोग से कार्बन फुटप्रिंट कम होता है।
- उदाहरण: सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा के लिए राजस्थान और गुजरात का चयन।
- लाभ: सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण।

प्रादेशिक संसाधन आधारित विनिर्माण की सीमाएं:

- कच्चे माल की कमी:
 - कुछ क्षेत्रों में संसाधनों का तेजी से दोहन दीर्घकालिक टिकाऊ विकास में बाधा बन सकता है।
 - उदाहरण: झारखंड और ओडिशा में कोयले और लौह अयस्क का अत्यधिक दोहन।
- प्रौद्योगिकी और कौशल की कमी:
 - क्षेत्रीय संसाधनों का कुशल उपयोग उन्नत प्रौद्योगिकी और कुशल श्रमिकों पर निर्भर करता है।
 - उदाहरण: पूर्वोत्तर में बांस उद्योग में तकनीकी प्रशिक्षण की कमी।
- पर्यावरणीय क्षति:
 - खनन और संसाधन आधारित उद्योगों से वनों की कटाई, जल प्रदूषण और भूमि क्षरण।
 - उदाहरण: कोयला खनन क्षेत्रों में वायु और जल प्रदूषण।

- राजनीतिक और नीतिगत चुनौतियाँ:
 - भूमि अधिग्रहण, कानूनी समस्याएं और स्थानीय समुदायों का विरोध।
 - उदाहरण: ओडिशा और छत्तीसगढ़ में खनिज खनन से संबंधित विरोध प्रदर्शन।
- वित्तीय और बुनियादी ढांचे की कमी:
 - कई क्षेत्रों में बिजली, परिवहन और संचार की कमी।
 - उदाहरण: पूर्वोत्तर भारत में बुनियादी ढांचे की कमी।
- आपूर्ति श्रृंखला की जटिलताएं:
 - कच्चे माल की गुणवत्ता और निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करना कठिन हो सकता है।
 - उदाहरण: झारखंड में लौह अयस्क खनन पर नक्सलवाद का प्रभाव।

भारत सरकार के प्रयास:

- डिस्ट्रिक्ट मिनरल फंड (DMF):
 - खनिज संसाधनों से होने वाली आय का एक हिस्सा खनन प्रभावित जिलों के विकास के लिए उपयोग करना।
- पीएलआई (प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव) योजना:
 - निर्यात प्रोत्साहन और औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन।
- गति शक्ति योजना:
 - मल्टीमोडल कनेक्टिविटी, लॉजिस्टिक्स सुधार और औद्योगिक क्लस्टर विकास।
- पूर्वोत्तर औद्योगिक विकास योजना (NEIDP):
 - पूर्वोत्तर राज्यों में उद्योगों को बढ़ावा देना।
- वन डिस्ट्रिक्ट, वन प्रोडक्ट (ODOP):
 - प्रत्येक जिले की विशिष्ट उत्पाद क्षमता का विकास।
- नेशनल ग्रीन हाइड्रोजन मिशन:
 - स्वच्छ और हरित ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना।
- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY):
 - स्थानीय कौशल विकास और रोजगार सृजन।
- CAMPA फंड:
 - वनीकरण और पारिस्थितिकी संरक्षण के लिए वित्तीय सहायता।
- सागरमाला और भारतमाला योजना:
 - तटीय और सड़क परिवहन बुनियादी ढांचे का विकास।

वैश्विक तुलना:

1. चीन:

- प्राकृतिक संसाधनों (कोयला, दुर्लभ धातु, लोहा) का अधिकतम उपयोग करते हुए वैश्विक विनिर्माण केंद्र का दर्जा प्राप्त किया।
- "मेड इन चाइना 2025" जैसी नीतियों से हाई-टेक मैन्युफैक्चरिंग और स्मार्ट फैक्ट्रीज को बढ़ावा।

2. जर्मनी:

- स्थानीय संसाधनों (कोयला, लोहा, ऑटोमोटिव) का उपयोग कर "इंडस्ट्री 4.0" का नेतृत्व।
- BMW, Mercedes-Benz और Siemens जैसे विश्व प्रसिद्ध ब्रांड।

3. ऑस्ट्रेलिया:

- लौह अयस्क, कोयला, सोना और प्राकृतिक गैस के निर्यात में अग्रणी।
- खनन उद्योग GDP में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

4. ब्राजील:

- कृषि और खनिज आधारित विनिर्माण में सफलता प्राप्त की है।
- चीनी, कॉफी, सोयाबीन, और लोहा जैसे संसाधनों का वैश्विक निर्यातक।

5. अमेरिका:

- अपने ऊर्जा संसाधनों (तेल, प्राकृतिक गैस) और अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए विनिर्माण का केंद्र बना है।
- सिलिकॉन वैली, टेक्सास और मिशिगन में उन्नत निर्माण सुविधाएँ।

निष्कर्ष:

प्रादेशिक संसाधन आधारित विनिर्माण की रणनीति एक प्रभावी आर्थिक मॉडल हो सकती है, बशर्ते कि इसे दीर्घकालिक दृष्टिकोण, पर्यावरणीय संतुलन और स्थानीय समुदायों की भागीदारी के साथ लागू किया जाए। चीन, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका जैसे देशों से सीख लेकर, भारत भी अपने क्षेत्रीय संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग कर सकता है, जिससे आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और सतत विकास को बढ़ावा मिल सकता है।

16. भारत में डिजिटल क्रांति के महत्व व चुनौतियों पर चर्चा करें।

परिचय:

भारत में डिजिटल क्रांति (Digital Revolution) ने पिछले दो दशकों में अभूतपूर्व परिवर्तन लाया है। इंटरनेट, मोबाइल कनेक्टिविटी, डेटा विश्लेषण, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), क्लाउड कंप्यूटिंग और डिजिटल भुगतान जैसी तकनीकों ने भारत को डिजिटल युग में एक मजबूत स्थिति में ला खड़ा किया है। 'डिजिटल इंडिया' जैसे सरकारी प्रयासों ने इस बदलाव को और तेज किया है। हालाँकि, इस क्रांति के कई लाभ होने के बावजूद, इससे जुड़ी चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं।

भारत में डिजिटल क्रांति का महत्व:

1. आर्थिक विकास:

- डिजिटल क्रांति ने भारतीय अर्थव्यवस्था को नई गति दी है।
- ई-कॉमर्स, फिनटेक, आईटी और स्टार्टअप्स का तेजी से विकास।
- उदाहरण: 2023 में भारतीय डिजिटल अर्थव्यवस्था का मूल्य लगभग 1 ट्रिलियन डॉलर हो गया है।
- डिजिटल भुगतान (UPI), ऑनलाइन बैंकिंग और मोबाइल वॉलेट्स का प्रसार।
- तुलना: चीन का डिजिटल अर्थव्यवस्था मूल्य 2022 में 7 ट्रिलियन डॉलर से अधिक था, जो वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था का 40% है।

2. रोजगार और उद्यमिता:

- डिजिटल अर्थव्यवस्था ने लाखों रोजगार सृजित किए हैं।
- स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसी पहलें।
- उदाहरण: फ्लिपकार्ट, जोमैटो, बायजूस, पेटीएम जैसे सफल स्टार्टअप्स।
- तुलना: अमेरिका की सिलिकॉन वैली ने माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, फेसबुक जैसी टेक दिग्गज कंपनियाँ दी हैं।

3. सामाजिक सशक्तिकरण:

- डिजिटल शिक्षा, टेलीमेडिसिन और ऑनलाइन स्किल डेवलपमेंट।
- डिजिटल मंचों के माध्यम से नागरिकों की सीधी भागीदारी।

- उदाहरण: प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान (PMGDISHA)।
- तुलना: एस्टोनिया ने डिजिटल साक्षरता में सबसे आगे रहते हुए पूरी सरकार को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर स्थानांतरित कर दिया है।

4. सरकारी सेवाओं की डिजिटल पहुंच:

- सरकारी सेवाओं की पारदर्शिता और दक्षता में वृद्धि।
- उदाहरण: डिजिटल इंडिया, जनधन योजना, आधार, डिजिटल भूमि रिकॉर्ड।
- तुलना: एस्टोनिया का e-Residency और e-Governance मॉडल एक प्रमुख उदाहरण है।

5. वित्तीय समावेशन:

- डिजिटल भुगतान और मोबाइल बैंकिंग से ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय सेवाओं की पहुंच।
- उदाहरण: UPI, BHIM, RuPay कार्ड और जनधन बैंक खाते।
- तुलना: चीन का Alipay और WeChat Pay दुनिया के सबसे बड़े डिजिटल भुगतान प्लेटफॉर्म हैं।

6. कृषि और ग्रामीण विकास:

- कृषि में डिजिटल तकनीकों का उपयोग - स्मार्ट खेती, ड्रोन, सटीक सिंचाई।
- डिजिटल मार्केटिंग और e-NAM (राष्ट्रीय कृषि बाजार) का विस्तार।
- उदाहरण: किसान रथ, e-NAM और फसल बीमा योजनाएँ।
- तुलना: इज़राइल की "प्रिसिजन एग्रीकल्चर" तकनीक से उच्च उत्पादन और जल संरक्षण।

7. डिजिटल स्वास्थ्य:

- टेलीमेडिसिन, ई-हेल्थ रिकॉर्ड और हेल्थकेयर एप्स का विस्तार।
- उदाहरण: आरोग्य सेतु, आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन।
- तुलना: फिनलैंड और डेनमार्क ने डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं में दुनिया का नेतृत्व किया है।

8. वैश्विक प्रतिस्पर्धा:

- डिजिटल क्रांति ने भारत को वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धी बनाया है।
- उदाहरण: भारतीय IT और BPO उद्योग का वैश्विक प्रभुत्व।
- तुलना: आयरलैंड और फिलीपींस ने भी आउटसोर्सिंग और IT सेवाओं में विश्वस्तरीय स्थिति हासिल की है।

भारत में डिजिटल क्रांति की चुनौतियाँ:

- डिजिटल विभाजन:
 - ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल अंतर।
 - इंटरनेट की पहुंच और स्पीड में असमानता।
 - उदाहरण: 2022 में, केवल 55% ग्रामीण भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ता।
 - तुलना: दक्षिण कोरिया और जापान में लगभग 95% इंटरनेट पहुंच है।
- साइबर सुरक्षा:
 - डेटा चोरी, हैकिंग, साइबर अपराध और ऑनलाइन धोखाधड़ी।
 - उदाहरण: आधार डेटा लीक, बैंक धोखाधड़ी और रेनसमवेयर हमले।
 - तुलना: अमेरिका और यूरोपीय संघ ने सख्त डेटा संरक्षण कानून (GDPR) लागू किए हैं।
- डिजिटल साक्षरता की कमी:
 - डिजिटल साक्षरता में कमी, विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में।
 - उदाहरण: डिजिटल साक्षरता दर केवल 38% (2022)।
 - तुलना: एस्टोनिया ने 99% डिजिटल साक्षरता प्राप्त की है।
- डेटा गोपनीयता:

- उपयोगकर्ता डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता का मुद्दा।
 - उदाहरण: पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन बिल 2019 का लंबित रहना।
 - तुलना: यूरोपीय संघ का GDPR दुनिया का सबसे कठोर डेटा गोपनीयता कानून है।
- इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी:
 - उच्च गति इंटरनेट, 5G, और डेटा सेंटर की कमी।
 - उदाहरण: ग्रामीण इलाकों में इंटरनेट स्पीड और नेटवर्क कवरेज की समस्याएँ।
 - तुलना: चीन ने 5G नेटवर्क में वैश्विक नेतृत्व हासिल किया है।
- भाषाई और सांस्कृतिक चुनौतियाँ:
 - डिजिटल सामग्री का अधिकतर हिस्सा अंग्रेजी में उपलब्ध।
 - स्थानीय भाषाओं में सामग्री की कमी।
 - तुलना: चीन, जापान और रूस ने अपनी भाषाओं में मजबूत डिजिटल उपस्थिति बनाई है।

भारत सरकार के प्रयास:

- डिजिटल इंडिया (2015):
 - भारत को डिजिटल सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने का लक्ष्य।
- भारतनेट परियोजना:
 - 2.5 लाख ग्राम पंचायतों को ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी से जोड़ना।
- जनधन-आधार-मोबाइल (JAM) ट्रिनिटी:
 - वित्तीय समावेशन और डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (DBT) को बढ़ावा।
- 5G नेटवर्क:
 - 2023 तक 5G रोलआउट और 6G की तैयारी।
- राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (NDHM):
 - डिजिटल हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास।
- मेक इन इंडिया और स्टार्टअप इंडिया:
 - घरेलू स्टार्टअप्स और मैनुफैक्चरिंग को बढ़ावा।
- PMGDISHA:
 - डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए।
- साइबर सुरक्षा:
 - CERT-In और राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति।

निष्कर्ष:

डिजिटल क्रांति ने भारत को एक मजबूत डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने का अवसर दिया है, लेकिन इसके सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। यदि इन चुनौतियों का सही ढंग से समाधान किया जाए, तो भारत एक वैश्विक डिजिटल नेता बनने की ओर अग्रसर हो सकता है। इसके लिए व्यापक डिजिटल साक्षरता, मजबूत साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और बुनियादी ढांचे में सुधार आवश्यक है।

17. भारतीय कृषि अभी नए दौर से गुजर रही हैं। अपना तर्क दें।

परिचय:

भारतीय कृषि, जो सदियों से पारंपरिक तरीकों पर आधारित थी, आज एक नए और आधुनिक दौर में प्रवेश कर रही है। यह परिवर्तन केवल उत्पादन पद्धतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रौद्योगिकी, विपणन, वित्तपोषण, और सरकारी नीतियों तक फैला हुआ है। बढ़ती जनसंख्या, जलवायु परिवर्तन, वैश्वीकरण और नई तकनीकों के उपयोग ने भारतीय कृषि को एक नये युग में ला खड़ा किया है, जहाँ पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ अब आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ जुड़ रही हैं।

भारतीय कृषि में हो रहे परिवर्तन:

1. तकनीकी प्रगति:

- स्मार्ट खेती, ड्रोन, सटीक सिंचाई, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग।
- IoT (Internet of Things) और सैटेलाइट इमेजिंग से मिट्टी, जल और फसल की स्थिति की निगरानी।
- उदाहरण: फसल स्वास्थ्य की निगरानी के लिए 'AgriStack' और 'Kisan Drones' का उपयोग।
- वैश्विक तुलना: इज़राइल और नीदरलैंड जैसे देशों में सटीक कृषि और जल प्रबंधन के बेहतरीन उदाहरण मिलते हैं।

2. डिजिटल और ई-कॉमर्स का विस्तार:

- किसानों को सीधा बाजार से जोड़ने के लिए ई-नाम (e-NAM) और कृषि मंच (AgriMarket) का विकास।
- डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन व्यापार से कृषि आपूर्ति श्रृंखला में सुधार।
- उदाहरण: 'किसान रथ' और 'नाफेड ई-कॉमर्स' जैसे डिजिटल मंच।
- वैश्विक तुलना: चीन का 'Pinduoduo' और 'Alibaba Rural Taobao' किसानों को सीधे उपभोक्ताओं से जोड़ता है।

3. कृषि वित्त और बीमा:

- फसल बीमा, कृषि ऋण, और माइक्रोफाइनेंस का विस्तार।
- उदाहरण: 'प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना' (PMFBY) और 'किसान क्रेडिट कार्ड' (KCC)।
- वैश्विक तुलना: अमेरिका का 'फार्म क्रेडिट सिस्टम' और जापान का 'जैपनीज एग्रीकल्चर कोऑपरेटिव' (JA)।

4. जलवायु स्मार्ट कृषि:

- जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए नई तकनीकों का उपयोग।
- सूखा-प्रतिरोधी बीज, जल-संवर्धन, और जलवायु अनुकूलन।
- उदाहरण: 'पर ड्रॉप मोर क्रॉप' और 'जल शक्ति अभियान'।
- वैश्विक तुलना: इज़राइल की 'ड्रिप इरिगेशन' और नीदरलैंड की ग्रीनहाउस खेती।

5. कृषि यंत्रीकरण:

- छोटे और सीमांत किसानों के लिए किफायती मशीनरी और उपकरण।
- फसल कटाई, बुवाई और फसल सुरक्षा में मशीनीकरण।
- उदाहरण: 'कस्टम हायरिंग सेंटर' (CHC) और 'फार्म मशीनरी बैंक'।
- वैश्विक तुलना: अमेरिका और कनाडा जैसे देश उच्च मशीनीकरण दर के लिए प्रसिद्ध हैं।

6. मूल्य संवर्धन और खाद्य प्रसंस्करण:

- कच्चे कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्धन और प्रसंस्करण।
- उदाहरण: 'पीएलआई योजना' (प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव) और 'मेगा फूड पार्क'।
- वैश्विक तुलना: ब्राज़ील और थाईलैंड कृषि प्रसंस्करण में अग्रणी हैं।

7. जैविक और प्राकृतिक खेती:

- रासायनिक खाद और कीटनाशकों से मुक्त खेती का प्रचलन।
- उदाहरण: 'परम्परागत कृषि विकास योजना' (PKVY) और 'भारतीय प्राकृतिक खेती प्रणाली' (BPKP)।
- वैश्विक तुलना: यूरोपीय संघ में जैविक खेती का क्षेत्रफल सबसे बड़ा है।

8. नीतिगत सुधार:

- कृषि उपज व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) अधिनियम, 2020।

- आवश्यक वस्तु (संशोधन) अधिनियम, 2020 और अनुबंध कृषि कानून।
- उदाहरण: 'किसान मानधन योजना' और 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि' (PM-KISAN)।
- वैश्विक तुलना: अमेरिका का 'फार्म बिल' और यूरोपीय संघ का 'कैप' (Common Agricultural Policy)।

भारत सरकार के प्रयास:

- डिजिटल इंडिया:
 - किसानों को डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ने का प्रयास।
- PM-KISAN:
 - हर किसान को 6000 रुपये की वार्षिक वित्तीय सहायता।
- पीएलआई योजना:
 - खाद्य प्रसंस्करण और निर्यात को बढ़ावा।
- कृषि अवसंरचना कोष:
 - 1 लाख करोड़ रुपये की योजना।
- राष्ट्रीय कृषि बाजार (e-NAM):
 - एकीकृत कृषि विपणन प्रणाली।
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY):
 - फसल बीमा और जोखिम प्रबंधन।

चुनौतियाँ:

- छोटे और सीमांत किसान:
 - भारत में 85% किसान छोटे और सीमांत हैं, जो नई तकनीकों तक आसानी से नहीं पहुँच पाते।
- जलवायु परिवर्तन:
 - अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और तापमान में वृद्धि।
- लागत और आय का असंतुलन:
 - खेती की लागत में वृद्धि, जबकि किसानों की आय स्थिर है।
- कृषि विपणन:
 - बिचौलियों की भूमिका, खराब सड़कों और कोल्ड स्टोरेज की कमी।
- प्राकृतिक संसाधनों का दोहन:
 - भूजल का अत्यधिक उपयोग और मिट्टी का क्षरण।
- क्रेडिट और वित्त की कमी:
 - छोटे किसानों के लिए किराया और सुलभ ऋण की कमी।

निष्कर्ष:

भारतीय कृषि एक नये दौर से गुजर रही है, जो प्रौद्योगिकी, बाजार और सरकारी नीतियों से प्रेरित है। हालाँकि, इस परिवर्तन को सफल बनाने के लिए बुनियादी ढांचे में सुधार, वित्तीय सहायता, डिजिटल साक्षरता और जलवायु अनुकूलन की आवश्यकता है। यदि इन चुनौतियों का सही समाधान किया जाए, तो भारत न केवल खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बन सकता है, बल्कि वैश्विक कृषि बाजार में भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कर सकता है।

18. भारत में बाढ़ की समस्या को जल संचय, सूखे से निपटने, सिंचाई आदि के लिए संधारणीय बनाया जा सकता है। कैसे?

परिचय:

भारत, अपनी भौगोलिक विविधता और मानसूनी जलवायु के कारण, अक्सर बाढ़ और सूखे जैसी विपरीत जल समस्याओं का सामना करता है। एक ओर असम, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में बाढ़ की समस्या है, तो दूसरी ओर राजस्थान, महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों में सूखे की समस्या है। यदि बाढ़ के अतिरिक्त जल को प्रभावी ढंग से संधारणीय

(Sustainable) रूप में संग्रहित और प्रबंधित किया जाए, तो यह न केवल बाढ़ को नियंत्रित करने में सहायक हो सकता है, बल्कि सूखे से निपटने, सिंचाई और जल पुनर्भरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

बाढ़ के जल को संधारणीय बनाने के उपाय:

1. जल संचय और पुनर्भरण:

- बाढ़ के जल को संरक्षित करने के लिए जलाशयों, चेक डैम, तालाबों और कृत्रिम झीलों का निर्माण।
- पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियाँ, जैसे - कुंड, बावड़ी और जोहड़ का पुनरुद्धार।
- उदाहरण: राजस्थान में तरुण भारत संघ का 'जोहर मॉडल' और गुजरात का 'सौराष्ट्र नर्मदा अवतरण इरिगेशन' (SAUNI) परियोजना।
- वैश्विक तुलना: चीन का 'श्री गॉर्जेस डैम' और इज़राइल का 'जल पुनर्भरण' मॉडल।

2. नदी-जोड़ परियोजनाएँ:

- अधिक जल वाली नदियों से सूखा प्रभावित नदियों को जोड़ना।
- बाढ़ के जल को सूखे क्षेत्रों में स्थानांतरित कर संतुलन बनाना।
- उदाहरण: केन-बेतवा लिंक परियोजना और दमनगंगा-पिंजाल लिंक योजना।
- वैश्विक तुलना: अमेरिका का 'टेनेसी वैली अथॉरिटी' और चीन का 'साउथ-नॉर्थ वॉटर ट्रांसफर प्रोजेक्ट'।

3. वर्षा जल संचयन:

- शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में वर्षा जल संग्रहण प्रणाली का अनिवार्य उपयोग।
- छत पर वर्षा जल संग्रहण और पुनर्भरण ढाँचे का निर्माण।
- उदाहरण: तमिलनाडु में वर्षा जल संचयन अनिवार्य नियम।
- वैश्विक तुलना: ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर जैसे देशों में वर्षा जल संचयन व्यापक स्तर पर अपनाया गया है।

4. बाढ़ का पानी खेतों में उपयोग:

- बाढ़ के पानी को कृषि उपयोग के लिए संग्रहीत करना।
- मृदा नमी को बनाए रखने और भूजल पुनर्भरण के लिए इसका उपयोग।
- उदाहरण: 'पर ड्रॉप मोर क्रॉप' और 'प्रिसिजन इरिगेशन'।
- वैश्विक तुलना: इज़राइल की 'ड्रिप इरिगेशन' और नीदरलैंड का जल प्रबंधन।

5. वेटलैंड और बाढ़ के मैदान का संरक्षण:

- वेटलैंड और प्राकृतिक बाढ़ क्षेत्र जल संग्रहण और पुनर्भरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- इनके संरक्षण से न केवल बाढ़ को नियंत्रित किया जा सकता है, बल्कि जैव विविधता को भी बढ़ावा मिलता है।
- उदाहरण: सुंदरबन, काजीरंगा और चिल्का झील।
- वैश्विक तुलना: अमेरिका का 'एवरग्लेड्स' और ब्राजील का 'पेंटानल' वेटलैंड।

6. जल निकासी और पुनर्भरण:

- जल निकासी तंत्र का सुधार और अपशिष्ट जल के पुनः उपयोग की व्यवस्था।
- उदाहरण: स्मार्ट सीवेज सिस्टम और वेस्टवाटर ट्रीटमेंट प्लांट।
- वैश्विक तुलना: सिंगापुर का 'NEWater' और डेनमार्क का 'स्मार्ट वॉटर मैनेजमेंट'।

7. सिंचाई में सुधार:

- बाढ़ के जल का सिंचाई के लिए कुशल उपयोग।
- ड्रिप और स्प्रिंकलर इरिगेशन जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग।

- उदाहरण: 'माइक्रो इरिगेशन फंड' और 'प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना' (PMKSY)।
- वैश्विक तुलना: इज़राइल और ऑस्ट्रेलिया की जल कुशल सिंचाई प्रणाली।

8. बाढ़ पूर्वानुमान और चेतावनी प्रणाली:

- जल प्रबंधन के लिए सटीक और समय पर बाढ़ पूर्वानुमान।
- उपग्रह, रडार और ड्रोन का उपयोग।
- उदाहरण: भारत का 'फ्लड मॉनिटरिंग सिस्टम' और 'इंडियन मेट्रोलॉजिकल डिपार्टमेंट' (IMD) का प्रारंभिक चेतावनी सिस्टम।
- वैश्विक तुलना: जापान और अमेरिका का अत्याधुनिक बाढ़ प्रबंधन नेटवर्क।

भारत सरकार के प्रयास:

- जल शक्ति अभियान:
 - जल संरक्षण और जल पुनर्भरण के लिए व्यापक पहल।
- नमामि गंगे:
 - गंगा नदी और इसकी सहायक नदियों का पुनरुद्धार।
- PMKSY (प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना):
 - 'हर खेत को पानी' और 'पर ड्रॉप, मोर क्रॉप' का लक्ष्य।
- अटल भूजल योजना:
 - भूजल स्तर को सुधारने के लिए।
- भारतनेट:
 - ग्रामीण भारत में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी प्रदान कर डिजिटल कृषि और जल प्रबंधन को सशक्त बनाना।
- राष्ट्रीय जल मिशन:
 - जल संसाधनों का सतत प्रबंधन।

चुनौतियाँ:

- पर्यावरणीय प्रभाव:
 - बड़े बांधों और जलाशयों का निर्माण पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।
- राजनीतिक और अंतर्राज्यीय विवाद:
 - नदी जोड़ परियोजनाओं में राज्यों के बीच जल बंटवारे का विवाद।
- वित्तीय चुनौतियाँ:
 - बड़े जल प्रबंधन परियोजनाओं की उच्च लागत।
- सामाजिक चुनौतियाँ:
 - भूमि अधिग्रहण, विस्थापन और जनसंख्या पुनर्वास।
- प्रौद्योगिकी की कमी:
 - छोटे किसानों के लिए उन्नत तकनीक और जल प्रबंधन उपकरणों की कमी।

निष्कर्ष:

भारत में बाढ़ की समस्या को जल संचय, सूखे से निपटने और सिंचाई के लिए संधारणीय बनाना न केवल संभव है, बल्कि आवश्यक भी है। इसके लिए न केवल तकनीकी नवाचार और बेहतर जल प्रबंधन की आवश्यकता है, बल्कि सामुदायिक भागीदारी, पर्यावरण संरक्षण और नीतिगत सुधार भी महत्वपूर्ण हैं। यदि इन चुनौतियों का सही समाधान किया जाए, तो बाढ़ का अतिरिक्त जल देश की जल सुरक्षा और कृषि उत्पादन को सुदृढ़ बना सकता है।

19. नवीन मध्यम वर्ग के उदय ने शहरीकरण को किस प्रकार बढ़ावा दिया है?

परिचय:

नवीन मध्यम वर्ग (New Middle Class) का उदय भारत के सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। उदारीकरण, वैश्वीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने इस वर्ग के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस वर्ग की बढ़ती क्रय शक्ति, जीवनशैली में बदलाव और आर्थिक महत्वाकांक्षाएं शहरीकरण (Urbanization) को तेजी से बढ़ावा दे रही हैं। यह प्रवृत्ति न केवल भारत, बल्कि चीन, ब्राजील, दक्षिण कोरिया और अन्य विकासशील देशों में भी देखी जा रही है।

नवीन मध्यम वर्ग और शहरीकरण के बीच संबंध:

1. आय में वृद्धि और उपभोक्तावाद:

- मध्यम वर्ग की आय में वृद्धि से शहरी जीवनशैली और उपभोग के स्तर में सुधार हुआ है।
- उच्च आय के कारण बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य और मनोरंजन की मांग बढ़ी है।
- उदाहरण: मॉल, मल्टीप्लेक्स, रेस्तरां और फूड डिलीवरी सेवाओं का विस्तार।
- वैश्विक तुलना:
 - चीन: 300 मिलियन से अधिक मध्यम वर्ग ने 2022 में शहरीकरण दर को 65% तक पहुँचा दिया।
 - ब्राजील: 80% से अधिक जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ मध्यम वर्ग की प्रमुख भूमिका है।

2. आवास और रियल एस्टेट का विकास:

- मध्यम वर्ग की बढ़ती संपत्ति और स्थायी आवास की मांग से शहरी क्षेत्रों में आवासीय परियोजनाओं का विस्तार हुआ।
- अपार्टमेंट, गेटेड कम्युनिटी और स्मार्ट सिटी परियोजनाओं का विकास।
- उदाहरण: बेंगलुरु, पुणे, गुरुग्राम और नोएडा में रियल एस्टेट का तेजी से विकास।
- वैश्विक तुलना:
 - दुबई: विश्व स्तर पर आवासीय और व्यावसायिक रियल एस्टेट का एक प्रमुख केंद्र।
 - सिंगापुर: उच्च मध्यम वर्ग के कारण किफायती आवास और गगनचुंबी इमारतों का विस्तार।

3. रोजगार और सेवाओं की बढ़ती मांग:

- IT, BPO, बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं और खुदरा व्यापार में रोजगार के अवसर।
- शहरी क्षेत्रों में बेहतर वेतन और करियर ग्रोथ के कारण बड़े पैमाने पर ग्रामीण-शहरी प्रवास।
- उदाहरण: बेंगलुरु, हैदराबाद और पुणे जैसे शहर IT हब बन गए हैं।
- वैश्विक तुलना:
 - सिलिकॉन वैली (अमेरिका): टेक्नोलॉजी और स्टार्टअप का वैश्विक केंद्र।
 - शेनझेन (चीन): इलेक्ट्रॉनिक्स और विनिर्माण का हब।

4. बुनियादी ढांचे का विकास:

- सड़क, मेट्रो, परिवहन, बिजली और इंटरनेट जैसी आधारभूत संरचनाओं में सुधार।
- स्मार्ट सिटी परियोजनाएँ और स्मार्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण।
- उदाहरण: दिल्ली मेट्रो, मुंबई मेट्रो और बेंगलुरु मेट्रो।
- वैश्विक तुलना:
 - जापान: उन्नत बुनियादी ढाँचा और हाई-स्पीड रेल नेटवर्क।
 - दक्षिण कोरिया: सियोल में हाई-टेक स्मार्ट सिटी मॉडल।

5. शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार:

- बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की मांग में वृद्धि।
- निजी स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल और हेल्थकेयर सेंटर का विस्तार।
- उदाहरण: अपोलो, फोर्टिस, और मेदांता जैसे बड़े अस्पताल और विश्वविद्यालय।

- वैश्विक तुलना:
 - अमेरिका: विश्व स्तरीय विश्वविद्यालय और अस्पताल।
 - यूरोप: उच्च शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा का उन्नत ढांचा।

6. डिजिटल और ई-कॉमर्स का प्रसार:

- ऑनलाइन शॉपिंग, फिनटेक, डिजिटल भुगतान और ई-कॉमर्स का विस्तार।
- उदाहरण: फ्लिपकार्ट, अमेज़न, स्विगी, जोमैटो, पेटीएम जैसी कंपनियाँ।
- वैश्विक तुलना:
 - चीन: अलीबाबा और JD.com, दुनिया के सबसे बड़े ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म।
 - अमेरिका: अमेज़न और eBay का वैश्विक प्रभुत्व।

7. सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन:

- पारंपरिक संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर झुकाव।
- मनोरंजन, पर्यटन, और आधुनिक जीवनशैली का बढ़ता प्रभाव।
- उदाहरण: मल्टीप्लेक्स, कैफे, फिटनेस सेंटर और जिम का तेजी से विस्तार।
- वैश्विक तुलना:
 - पश्चिमी देश: 'कंज्यूमरिस्ट कल्चर' का प्रभाव।
 - दक्षिण कोरिया: K-POP, कॉफी कल्चर और शहरी जीवनशैली का प्रभाव।

8. वाहन और परिवहन की मांग:

- निजी वाहनों, कैब सेवाओं और पब्लिक ट्रांसपोर्ट की बढ़ती मांग।
- उदाहरण: ओला, उबर, मेट्रो और बस रैपिड ट्रांजिट (BRT) सिस्टम।
- वैश्विक तुलना:
 - चीन: दुनिया का सबसे बड़ा इलेक्ट्रिक वाहन बाजार।
 - जापान: हाई-स्पीड ट्रेन और उन्नत परिवहन नेटवर्क।

भारत सरकार के प्रयास:

- स्मार्ट सिटी मिशन (2015):
 - 100 स्मार्ट शहरों का विकास।
- प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY):
 - सस्ते और किफायती आवास की उपलब्धता।
- मेक इन इंडिया:
 - औद्योगिकीकरण और रोजगार सृजन को बढ़ावा।
- डिजिटल इंडिया:
 - डिजिटल कनेक्टिविटी और ई-गवर्नेंस का विस्तार।
- राष्ट्रीय शहरी नवीनीकरण मिशन (AMRUT):
 - शहरी बुनियादी ढांचे का सुधार।
- भारतनेट:
 - ग्रामीण और शहरी डिजिटल कनेक्टिविटी में सुधार।

चुनौतियाँ:

- आवास की कमी:
 - शहरी क्षेत्रों में किफायती आवास की कमी।
- बुनियादी ढांचे पर दबाव:
 - सड़कों, जल निकासी और बिजली की कमी।
- पर्यावरणीय समस्याएँ:

- वायु प्रदूषण, कचरा प्रबंधन और जल संकट।
- ट्रेफिक और कनेक्टिविटी:
 - ट्रेफिक जाम और सार्वजनिक परिवहन की समस्याएँ।
- सामाजिक असमानता:
 - अमीर-गरीब के बीच बढ़ती खाई।

निष्कर्ष:

नवीन मध्यम वर्ग का उदय न केवल भारत के आर्थिक विकास को बढ़ावा दे रहा है, बल्कि शहरीकरण की प्रक्रिया को भी तेज कर रहा है। हालाँकि, इस बदलाव के साथ कई सामाजिक, पर्यावरणीय और बुनियादी ढांचे से जुड़ी चुनौतियाँ भी हैं, जिन्हें संतुलित विकास और स्थायी शहरी नियोजन के माध्यम से संबोधित किया जाना चाहिए।

20: 18वीं-19वीं सदी भारत के लिए अंधकार युग था। बतायें।

परिचय:

18वीं और 19वीं सदी का कालखंड भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण युग रहा। इस समय भारत को राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक विघटन, आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक पतन का सामना करना पड़ा। यह वह समय था जब मुगल साम्राज्य का पतन हो रहा था और ब्रिटिश साम्राज्यवाद तेजी से भारत पर अपना नियंत्रण स्थापित कर रहा था। इस युग को अक्सर "अंधकार युग" (Dark Age) के रूप में देखा जाता है, जब भारत ने न केवल अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता खोई, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी गंभीर चुनौतियों का सामना किया।

18वीं-19वीं सदी में भारत के अंधकार युग के प्रमुख कारण:

1. राजनीतिक विघटन और विदेशी आक्रमण:

- 18वीं सदी की शुरुआत में औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन।
- मराठा, सिख, राजपूत, अफगान और अन्य स्थानीय शक्तियों का आपसी संघर्ष।
- उदाहरण: प्लासी (1757) और बक्सर (1764) की लड़ाइयों में अंग्रेजों की जीत।
- वैश्विक तुलना: चीन में मिंग राजवंश का पतन और अफ्रीकी देशों में उपनिवेशवाद का विस्तार।

2. ब्रिटिश उपनिवेशवाद और शोषण:

- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत पर नियंत्रण और शोषणकारी नीतियाँ।
- व्यापार पर एकाधिकार, भारी कर प्रणाली और भारतीय उद्योगों का विनाश।
- उदाहरण: बंगाल का आर्थिक शोषण, कपड़ा उद्योग का पतन और स्थाई बंदोबस्त प्रणाली।
- वैश्विक तुलना: अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में उपनिवेशवादी शोषण।

3. कृषि और आर्थिक पतन:

- पारंपरिक कृषि प्रणाली का विनाश और किसानों का अत्यधिक शोषण।
- भू-राजस्व नीतियाँ, भारी कर, अकाल और गरीबी।
- उदाहरण: 1770 का बंगाल का भीषण अकाल, जिसमें लगभग 1 करोड़ लोगों की मृत्यु।
- वैश्विक तुलना: आयरलैंड का 'ग्रेट पोटेटो फेमिन' (1845-1852)।

4. सामाजिक विघटन और सांस्कृतिक पतन:

- जातिवाद, छुआछूत, बाल विवाह, सती प्रथा, और बाल मजदूरी जैसी सामाजिक कुरीतियाँ।
- शिक्षा का पतन, पारंपरिक शिल्प और कुटीर उद्योगों का विनाश।
- उदाहरण: सती प्रथा, देवदासी प्रथा और महिला शिक्षा की उपेक्षा।
- वैश्विक तुलना: चीन में अफीम युद्ध और अफ्रीका में गुलामी प्रथा।

5. धार्मिक कट्टरता और सामाजिक असमानता:

- धर्म और जाति आधारित भेदभाव, धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास।
- उदाहरण: जाति व्यवस्था का कठोर अनुपालन और शूद्रों का शोषण।
- वैश्विक तुलना: यूरोप में मध्यकालीन धार्मिक कट्टरता और धार्मिक युद्ध।

6. शिक्षा और वैज्ञानिक सोच का अभाव:

- परंपरागत गुरुकुल और मदरसों का पतन, आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अभाव।
- वैज्ञानिक सोच और औद्योगिकीकरण का न होना।
- उदाहरण: ब्रिटिश शिक्षा नीति का उद्देश्य - "क्लर्क" तैयार करना।
- वैश्विक तुलना: यूरोप में 'पुनर्जागरण' और 'वैज्ञानिक क्रांति' का उदय।

7. भारतीय उद्योगों का विनाश:

- भारतीय हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों का ब्रिटिश मशीन निर्मित वस्त्रों द्वारा प्रतिस्थापन।
- उदाहरण: बंगाल का कपड़ा उद्योग, कश्मीरी शॉल और धातु शिल्प का पतन।
- वैश्विक तुलना: चीन का 'सिल्क रोड' व्यापार का पतन।

8. राष्ट्रीयता और राजनीतिक चेतना का अभाव:

- भारतीय जनता में राष्ट्रीय एकता और राजनीतिक चेतना का अभाव।
- क्षेत्रीय, धार्मिक और जातिगत विभाजन।
- उदाहरण: 1857 का विद्रोह - स्थानीय असंतोष और व्यापक राष्ट्रीय चेतना का अभाव।
- वैश्विक तुलना: फ्रांस में 'फ्रेंच रिवोल्यूशन' और अमेरिका में 'स्वतंत्रता संग्राम'।

भारत सरकार और समाज सुधारकों के प्रयास:

- राजा राममोहन राय:
 - सती प्रथा उन्मूलन, महिला शिक्षा और प्रेस की स्वतंत्रता।
- ईश्वर चंद्र विद्यासागर:
 - विधवा पुनर्विवाह और महिला शिक्षा का समर्थन।
- स्वामी दयानंद सरस्वती:
 - आर्य समाज और 'वेदों की ओर लौटो' का आह्वान।
- महात्मा गांधी:
 - सत्य, अहिंसा और सामाजिक समानता का संदेश।
- सामाजिक सुधार आंदोलन:
 - ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज और सत्यशोधक समाज।

निष्कर्ष:

18वीं और 19वीं सदी का काल भारतीय इतिहास का एक कठिन और चुनौतीपूर्ण दौर था, जिसे 'अंधकार युग' कहा जा सकता है। यह समय राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक शोषण, सामाजिक विघटन और सांस्कृतिक पतन से घिरा हुआ था। हालाँकि, इस युग में कई समाज सुधारकों और स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत को जागरूक और संगठित करने का प्रयास किया, जिससे आगे चलकर राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ और स्वतंत्रता संग्राम को मजबूती मिली।



Result Mitra